फ़तह इस्लाम

(इस्लाम की विजय)

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान

फ़तह इस्लाम

(इस्लाम की विजय)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद,क़ादियानी

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नाम किताब : **फ़तह इस्लाम**
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मअहूद
अनुवादक : अताउर्रहमान ख़ालिद
प्रूफ़रीडर : अन्सार अहमद बी.ए.एच.ए.बी.ऐड.
प्रकाशन वर्ष : फ़रवरी 2012 ई.
संख्या : 1000
प्रकाशन : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान

प्रकाशक

नज़ारत नश्र व इशाअत
क़ादियान-143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)

ISBN - 978-81-7912-329-4

الحمد للہ والمنت کہ رسالہ تالیف کردہ مجدد دوران مسیح الزمان مرزا غلام احمد رئیس قادیان موسوم بہ

الہامی [illegible] الہامی

فتح اسلام

حصہ اوّل

اور خدا تعالیٰ کے تجلّی خاص کی بشارت اور اسکی پیروی کی راہوں اور اسکی تائید کے طریقوں کی طرف دعوت

جمادی الاوّل ۱۳۰۸ ہجری میں

باہتمام شیخ نور احمد مالک مطبع ریاض ہند امرتسر میں طبع ہوکر ہدایت عام و تبلیغ پیام اور اتمام حجت کی غرض سے بامر و اذن الٰہی شائع کیا گیا

قیمت فی مجلد ۸/

प्राक्कथन

यह पुस्तक युगावतार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम ने सन् 1890 ई. में उर्दू भाषा में लिखी। 1891 ई. के आरम्भ में छप कर प्रकाशित हुई। इस में आप ने घोषणा की कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मसीह जो आने वाला था वह मैं हूँ चाहो तो क़बूल करो। फिर फ़रमाया कि ''मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गया है ताकि सलीबी विचारधारा को टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाये। अतः मैं सूली को तोड़ने और सूअरों के वध करने के लिए भेजा गया हूँ।'' इसी प्रकार आप ने मुसलमानों पर स्पष्ट किया कि आप का आविर्भाव सलीबी विचारधाराओं के तिलस्म को तोड़ने के लिए ख़ुदा तआला की और से एक चमत्कार है।

सैयदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद इमाम जमाअत अहमदिय्या पंचम की अनुमति से दफतर नश्रो इशाअत कादियान उक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहा है। अल्लाह तआला इसेहिन्दी भाषियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद बनाये। तथास्तु

भवदीय

नाज़िर नश्र व इशाअत

घोषणा

यह किताब फ़तह इस्लाम 700 प्रतियाँ छपी हैं इन में से 300 प्रतियां अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए उन लोगों के नाम समर्पित कर दी हैं जो इस्लाम के उपदेशक वर्गों में से अथवा निर्धन जिज्ञासुओं में से या ईसाइयों अथवा हिन्दुओं के विद्वानों में से हैं। शेष 400 प्रतियां ऐसे लोगों को जो मूल्य देकर लेने की सामर्थ्य रखते हैं। आठ आने प्रति के मूल्य पर दी जायेंगी। डाक-खर्च अलग है। जो व्यक्ति मुफ़्त लेने वालों में से हो अर्थात उपदेशकों या निर्धन लोगों में से हो उस पर अनिवार्य है कि केवल आधे आने का टिकट भेज दे, किताब भेज दी जायेगी।

उद्घोषक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इस्लाम की विजय और ख़ुदा तआला के विशेष चमत्कार के प्रकटन का शुभसन्देश और उसके अनुसरण के मार्गों और उसके समर्थन के तरीकों की ओर निमंत्रण

رَبِّ انۡفُخۡ رُوۡحَ بَرَکَۃٍ فِیۡ کَلَامِیۡ ھٰذَا وَاجۡعَلۡ اَفۡئِدَۃً مِّنَ النَّاسِ تَھۡوِیۡ اِلَیۡہِ

(अनुवादः– हे मेरे प्रतिपालक ! मेरे इस लेख में बरकत डाल और लोगों के दिल इस की और आकर्षित कर। – अनुवादक)

हे पाठकगण ! عافاکم اللہ فی الدنیا والدین अर्थात् अल्लाह तआला आप लोगों की धार्मिक और सांसारिक त्रुटियों को क्षमा करे। आज यह विनीत एक लम्बे समय के बाद उस ईश्वरीय कार्य के बारे में जो ख़ुदा तआला ने इस्लाम धर्म की सहायता के लिए मेरे सुपुर्द किया है एक महत्वपूर्ण लेख की ओर आप लोगों को ध्यान दिलाता है मैं इस लेख में जहाँ तक ख़ुदा तआला ने अपनी ओर से मुझे भाषण देने की सामर्थ्य प्रदान की है इस सिलसिले की महानता और इस व्यवस्था की सहायता की आवश्यकता आप लोगों के समक्ष प्रकट करना चाहता हूँ ताकि वह प्रचार का दायत्वि जो मुझ पर अनिवार्य है उसको मैं पूर्ण कर सकूँ। अतः इस लेख के वर्णन में मुझे इस से कोई सरोकार नहीं कि इस लेख का दिलों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। उद्देश्य केवल यह है कि जो बात मुझ पर अनिवार्य है और जो सन्देश पहुँचाना मेरा परम कर्तव्य है वह मुझ से ठीक–ठीक अदा हो जाये चाहे लोग उसे प्रसन्नतापूर्वक सुनें और चाहे दुर्भावना और निन्दा से देखें, चाहे मेरे बारे में अच्छी भावना रखें अथवा दुर्भावना को अपने दिलों में जगह दें। وَاُفَوِّضُ اَمۡرِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ وَاللّٰہُ بَصِیۡرٌۢ بِالۡعِبَادِ (अर्थात

मैं अपना मामला ख़ुदा के सुपुर्द करता हूँ वह अपने भक्तों को अच्छी तरह देखने वाला है। अनुवादक)

अब मैं वह लेख नीचे लिखता हूँ जिसका वादा ऊपर दिया है:-

हे सच्चाई के चाहने वालो और इस्लाम के सच्चे प्रेमियो ! आप लोगों पर स्पष्ट है कि यह ज़माना जिस में हम लोग जीवन-यापन कर रहे हैं यह एक अंधकारमय ज़माना है, क्या ईमान से सम्बन्धित और क्या व्यवहार से सम्बन्धित, जितनी भी बातें हैं सब में अत्यन्त बिगाड़ उत्पन्न हो गया है और बिगाड़ और भ्रष्टाचार की एक तेज़ आँधी हर तरफ से चल रही है। वह चीज़ जिसको ईमान कहते हैं उसकी जगह कुछ शब्दों ने ले ली है जिनकी स्वीकारोक्ति केवल (शाब्दिक रूप से) ज़ुबान से की जाती है और वे बातें जिन का नाम सत्कर्म है उनके चरितार्थ कुछ रस्में अथवा अपव्यय और दिखावे के काम समझे गये हैं। और जो वास्तविक नेकी है उस से पूर्णतया बेख़बरी है। इस ज़माने का दर्शनशास्त्र और विज्ञान भी आध्यात्मिक विशेषताओं के सरासर विपरीत है। उसकी भावनाएँ उसके जानने वालों पर अत्यन्त दुष्प्रभाव डालने वाली और अंधकार की ओर खींचने वाली सिद्ध होती हैं। वह विषैले तत्वों को सक्रिय करते और सोये हुए शैतान को जगा देते हैं। इन विषयों के विशेषज्ञ धार्मिक बातों में अधिकतर ऐसी कुधारणा पैदा कर लेते हैं कि ख़ुदा तआला के निश्चित सिद्धान्तों और नमाज़ और उपवास इत्यादि उपासना के नियमों को तुच्छ और उपहास की दृष्टि से देखने लगते हैं। उन के दिलों में ख़ुदा तआला के अस्तित्व का भी कोई महत्व और मर्यादा नहीं, अपितु उनमें से अधिकांश अधर्म और नास्तिकता के रंग में रंगीन तथा मुसलमानों की संतान कहलाकर भी धर्म के शत्रु हैं। जो लोग कालेजों में पढ़ते हैं अधिकतर ऐसा ही होता है कि अभी वे अपने आवश्यक शिक्षाग्रहण से मुक्त नहीं होते कि पहले ही धर्म और धर्म के प्रति सहानुभूति मुक्त हो जाते हैं। यह मैंने केवल **एक शाखा** का उल्लेख किया है जो वर्तमान समय में पथ-भ्रष्टता के फलों से लदी हुई

है। परन्तु इसके अतिरिक्त सैकड़ों और शाखाऐं भी हैं जो इस से कम नहीं। साधारणत: देखा जाता है कि संसार से ईमानदारी और सच्चाई ऐसी उठ गई है कि मानो पूर्णतया समाप्त हो गयी है। दुनिया कमाने के लिए कपट और धोखा अत्यधिक बढ़ गए हैं। जो व्यक्ति सब से अधिक धूर्त हो वही सब से अधिक योग्य समझा जाता है। तरह तरह का झूठ, धोखेबाज़ी, दुष्कृत्य, विश्वासघात, छल-कपट और अत्यधिक चालाकी और लालच से भरी हुई योजनाएं और दुराचार से भरी हुई आदतें फैलती जाती हैं और अत्यन्त कठोरता से भरे हुए द्वेष और झगड़े बढ़ रहे हैं और पाश्विक और नीच भावनाओं का एक तूफ़ान उठा हुआ है। जितने लोग इन शिक्षाओं और प्रचलित विधानों में चुस्त और चालाक होते जाते हैं उतने ही उत्तम परम्परा, पुण्य कर्म की स्वाभाविक आदतें और लज्जा तथा शर्म और ख़ुदा का भय तथा ईमानदारी की स्वाभाविक विशेषताएं उन में कम होती जाती हैं।

ईसाइयों की शिक्षा भी सच्चाई और ईमानदारी को उड़ाने के लिए कई प्रकार की सुरंगें तैयार कर रही है। ईसाई लोग इस्लाम के मिटाने के लिए झूठ और बनावट की समस्त बारीक बातों को अत्यन्त परिश्रम से पैदा करके प्रत्येक बटमारी के अवसर पर प्रयोग में ला रहे हैं और बहकाने के नये-नये नुस्ख़े और पथभ्रष्ट करने के नवीन-नवीन उपाय किए जाते हैं और उस महामानव की घोर निन्दा कर रहे हैं जो समस्त महा-पुरुषों का मान और समस्त ख़ुदा के सदात्मा लोगों का सरताज और सभी महान् रसूलों का सरदार था। यहाँ तक कि नाटक के खेलों में घोर दुष्टता के साथ इस्लाम और इस्लाम के पवित्र संस्थापक की तस्वीरें बुरे-बुरे ढंग में दिखाई जाती हैं और स्वांग निकाले जाते हैं और थिएटर के द्वारा ऐसे झूठे लांछन फैलाए जाते हैं जिसमें इस्लाम और पवित्र नबी की प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला देने के लिए पूरी धृष्टता खर्च की गई है।

अब हे मुसलमानो! सुनो और ध्यानपूर्वक सुनो कि इस्लाम के अच्छे

प्रभावों को रोकने के लिए जितने घोर मिथ्यारोप इस ईसाई क़ौम में प्रयोग किए गए और चालाकी पूर्ण उपाय किए गए और उनके फैलाने में जान तोड़ कर और धन को पानी की भाँति बहा कर प्रयत्न किए गए यहाँ तक कि अत्यन्त शर्मनाक साधन भी जिनकी चर्चा से इस लेख को पवित्र रखना उचित होगा, इसी मार्ग में प्रयोग किए गए। ये ईसाई क़ौमों और तसलीस (तीन ख़ुदा) के समर्थकों की ओर से वे धोखा देने वाली कार्यवाहियां हैं कि जब तक उनके इस जादू के विरुद्ध ख़ुदा तआला वह सशक्त हाथ न दिखाए जो चमत्कार की शक्ति अपने अन्दर रखता हो और उस चमत्कार से इस धोखे को टुकड़े-टुकड़े न करे, तब तक इस यूरोपीय जादू से सरल स्वभाव वालों को छुटकारा मिलना कल्पना और सोच से बाहर है। अतः ख़ुदा तआला ने इस जादू के मिटाने के लिए इस ज़माने के सच्चे मुसलमानों को यह चमत्कार प्रदान किया कि अपने इस सेवक को अपनी ईशवाणी और विशेष बरकतों से सम्मानित करके और अपने मार्ग के सूक्ष्म ज्ञान से पूर्ण जानकारी प्रदान करके विरोधियों के विरुद्ध भेजा, और बहुत से आसमानी तोहफे और आध्यात्मिक चमत्कार और आध्यात्मिक ज्ञान और बारीकियां साथ दीं ताकि उस आसमानी पत्थर के द्वारा वह मोम की मूर्ति तोड़ दी जाये जिसे यूरोपीय जादू ने तैयार किया है। अतः हे मुसलमानो ! इस विनीत का प्रकटन जादुई अंधेरों के उठाने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से एक चमत्कार है। **क्या आवश्यक नहीं था कि जादू के विरुद्ध चमत्कार भी संसार में आता।** क्या तुम्हारी दृष्टि में यह बात अद्‌भुत और अनहोनी है कि ख़ुदा तआला ऐसी अत्यन्त चालाकीपूर्ण योजनाओं के विरुद्ध जो वस्तुतः जादू का रूप धारण कर गई हैं एक ऐसी सच्ची झलक दिखाए जो चमत्कार का प्रभाव रखती हो।

हे समझदार लोगो ! तुम इस से आश्चर्य मत करो कि ख़ुदा तआला ने इस ज़रूरत के समय में और इस घोर अंधकार के दिनों में एक आसमानी प्रकाश भेजा और एक भक्त का सार्वजनिक भलाई के लिए चयन करके

इस्लाम का नाम ऊँचा करने, हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को प्रकाश फैलाने और मुसलमानों की सहायता के लिए, इसी प्रकार उन की अन्दरूनी हालत को साफ करने के इरादे से संसार में भेजा। हैरानी तो इस में होती कि वह ख़ुदा जो इस्लाम धर्म का समर्थक है, जिसने वादा किया था कि मैं सदा क़ुरआन की शिक्षा का संरक्षक रहूँगा और इसे प्रभावहीन, मलिन और प्रकाशहीन नहीं होने दूँगा, वह इस अंधेरे को देख कर और इन अन्दरूनी और बैरूनी फसादों पर दृष्टि डाल कर चुप रहता और अपने उस वायदे को याद न करता जिसको अपनी पवित्र वाणी में पक्के तौर पर वर्णन कर चुका था। फिर मैं कहता हूँ कि यदि अश्चर्य की जगह थी तो यह थी कि उस पाक रसूल की यह साफ और स्पष्ट भविष्यवाणी व्यर्थ जाती जिस में फर्माया गया था कि प्रत्येक शताब्दी के प्रारम्भ में ख़ुदा तआला एक ऐसे भक्त को पैदा करता रहेगा कि जो उस के धर्म का सुधार करेगा।[1] अतः यह आश्चर्य की बात

हाशिया न. (1) केवल परम्परा और ज़ाहिरी रंग में क़ुरआन शरीफ के अनुवाद फैलाना अथवा केवल धार्मिक किताबें और नबी (स.अ.व) की हदीसों को फारसी या ऊर्दू में अनुवाद करके प्रचलित करना अथवा बनावटी रस्मों से भरी हुई निरर्थक प्रथाओं जैसा कि आज कल के अधिकतर मशायख़ (धर्मगुरू) का चलन हो रहा है, सिखाना। ये बातें ऐसी नहीं हैं जिनको कामिल और वास्तव में धर्म का सुधार कहा जाये अपितु यह चलन तो शैतानी मार्गों का नवीनीकरण और धर्म की लूट है। क़ुरआन शरीफ़ और शुद्ध हदीसों को संसार में फैलाना अवश्य उत्तम कार्य है परन्तु परम्परागत रूप में और दिखावे के लिए चिन्तन-मनन से यह कार्य करना और स्वयं को वस्तुतः हदीस और क़ुरआन की शिक्षा का अनुयायी न बनाना, ऐसी बनावटी और निरर्थक सेवाएँ प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति कर सकता है और सदा से जारी हैं। इनका मुजद्दिदियत से कोई सम्बन्ध नहीं। ये समस्त बातें अस्थियां बेचना है, इस से बढ़ कर नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है।

नहीं अपितु हज़ारों धन्यवाद का स्थान और ईमान और आस्था के बढ़ाने का समय है। ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल और कृपा से अपने वायदे को पूरा कर दिया और अपने रसूल की भविष्यवाणी में एक मिनट का भी अन्तर नहीं आने दिया। न केवल इस भविष्यवाणी को पूरा करके दिखाया अपितु भविष्य के लिए भी हज़ारों भविष्यवाणियों और चमत्कारों का दरवाज़ा खोल दिया। यदि तुम ईमानदार हो तो घन्यवाद करो और धन्यवाद के सज्दे करो कि वह ज़माना जिसकी प्रतीक्षा करते-करते तुम्हारे पूर्वज मृत्यु को प्राप्त कर गये और अनगिनत आत्माऐं उसकी चाहत में ही प्रस्थान कर गईं। वह समय तुम ने पा लिया। अब इस की कद्र करना अथवा न करना और इस से लाभ उठाना अथवा न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इसका बार-बार वर्णन करूँगा और इसकी चर्चा से मैं रुक नहीं सकता कि **मैं वही हूँ जो यथा समय पर मानवजाति के सुधार के लिए भेजा गया।** ताकि धर्म को ताज़ा तौर पर

शेष हाशिया न. (1) ⟶

لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۔ کَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰہِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ

(अर्थात:- तुम वे बात क्यों कहते हो जो तुम स्वयं नहीं करते। अल्लाह के निकट उस बात का दावा करना जो तुम करते नहीं अत्यन्त घृणित है। (सूरह अस्सफ़, आयत नं 3-4)

और फ़रमाता है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ

(हे मोमिनो ! तुम अपने प्राणों (की रक्षा) की चिन्ता करो। जब तुम हिदायत पा जाओ तो किसी की गुमराही तुम को हानि न पहुँचाए।

(सूरह अल्माइद: आयत नं 106, अनुवादक)

अंधा अंधे को क्या रास्ता दिखाएगा और कोढ़ी दूसरों के शरीरों को क्या साफ करेगा। धर्म का संस्कार वह पवित्र अवस्था है कि पहले आशिक़ाना जोश के साथ उस पवित्र दिल पर उतरती है जो अल्लाह से

दिलों में क़ायम कर दिया जाये। मैं उसी प्रकार भेजा गया हूँ जिस प्रकार से वह व्यक्ति कलीमुल्लाह मर्दे ख़ुदा (अर्थात हज़रत मूसा(अ)) के बाद भेजा गया था जिसकी आत्मा हेरोडेस के शासनकाल में बहुत कष्ट उठाने के बाद आसमान की ओर उठाई गई। अत: जब दूसरा कलीमुल्लाह जो वास्तव में सब से पहला और नबियों का सरदार है दूसरे फिरऔन का सर कुचलने के लिए आया, जिस के बारे में है

①
اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاہِدًا عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(अर्थात:- हम ने तुम्हारी ओर एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर निगरान है उसी तरह जिस तरह हम ने फिरऔन की तरफ रसूल भेजा था। -अनुवादक) अत: उसको भी जो अपनी कार्यवाहियों में प्रथम कलीम (अर्थात-हज़रत मूसा[अ.]) के अनुरूप परन्तु प्रतिष्ठा में उस से महान् था, एक मसीह के अनुरूप (पुरुष) का वादा दिया गया और वह मसीह का अनुरूप मरियम पुत्र मसीह की शक्ति और स्वभाव तथा गुण पाकर उसी ज़माना की

शेष हाशिया न.①

वार्तालाप (प्राप्ति) के दर्जे तक पुहँच गया हो। फिर दूसरों में शीघ्र अथवा देर से उसका प्रवेश होता है। जो लोग ख़ुदा तआला की ओर से मुजद्दिद होने की शक्ति प्राप्त करते हैं वे केवल हड्डियां बाप दादों के नाम बेचने वाले नहीं होते अपितु वे वास्तविक रूप में हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के सहायक और आध्यात्मिक रूप से उनके उत्तराधिकारी होते हैं। ख़ुदा तआला उन्हें उन समस्त नैमतों का वारिस बनाता है जो नबियों और रसूलों को दी जाती हैं और उनकी बातें प्रारम्भ से जोश से भरी होती हैं न केवल पहले से जोड़-तोड़ कर बोली जाने वाली, वे व्यवहारिक रूप से बोलते हैं न केवल भाषण के रूप से, ख़ुदा तआला के इल्हाम (वाणी) की चमक उनके दिलों पर होती है, वे प्रत्येक कठिनाई के समय रूहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) से सिखलाये जाते हैं और उनकी कथनी और करनी में भौतिकवाद की मिलावट नहीं होती क्योंकि वे पूर्ण रूप से पवित्र किए गए और पूरे के पूरे (ख़ुदा की ओर) खींचे गए हैं। (इसी से)

①-अलमुज़्ज़म्मिल :16

भाँति और उसी समय के निकट जो पहले कलीम के ज़माना से मरियम पुत्र मसीह के ज़माना तक था अर्थात चौदहवीं शताब्दी में आसमान से उतरा । वह उतरना आध्यात्मिक रूप में था जैसा कि परम सिद्ध लोगों का उत्थान के बाद मानवजाति के सुधार के लिए अवतरण होता है और सब बातों में उसी ज़माना के अनुरूप ज़माना में उतरा जो मरियम पुत्र मसीह के उतरने का ज़माना था ताकि समझने वालों के लिए निशान हो।[2] अतः प्रत्येक को चाहिए कि इस

हाशिया न. (2) यह ज़माना जिस में हम हैं यह एक ऐसा ज़माना है कि ज़ाहिर परस्ती (भौतिकवादिता), वास्तविकता और सच्चाई से दूरी, ईमानदारी और अमानत से वञ्चित होना सत्य तथा नैतिक शुद्धता का अभाव, लालच और कंजूसी और सांसारिक साधनों के प्रति अत्यन्त लालसा साधारणतया इस ज़माना में ऐसी ही फैल गई है कि जैसे हज़रत मसीह (मरयम के पुत्र) के प्रकटन के समय यहूदियों में फैली हुई थी। अतः जैसे यहूदी लोग उस ज़माना में वास्तविक नेकी से पूर्णतया बेख़बर हो गये थे केवल रस्मों और परम्पराओं को नेकी समझते थे इसके अतिरिक्त सत्य और ईमानदारी, आन्तरिक शुद्धता और न्याय उनमें से पूर्णतया उठ गया था, सच्ची सहानुभूति और दया का नाम व निशान नहीं रहा था, विभिन्न प्रकार के प्राणियों की उपासना ने वास्तविक उपास्य (ख़ुदा तआला) का स्थान ले लिया था। ऐसी ही इस ज़माना में ये समस्त बुराइयाँ प्रकट हो गई हैं। वैध चीज़ों को धन्यवाद, आभार और विनम्रता के साथ प्रयोग नहीं किया जाता, अवैध कार्य करने से किसी प्रकार की घृणा और नफरत बाकी नहीं रही, ख़ुदा तआला के बड़े-बड़े आदेश बहानों के साथ टाल दिए जाते हैं। हमारे अधिकतर विद्वान भी उस समय के फ़क़ीहों और फरीसियों से कम नहीं, मच्छर छानते और ऊँट को निगल जाते हैं। आसमान की बादशाहत लोगों के आगे बन्द करते हैं। न तो स्वयं उसमें जाते हैं और न जानेवालों को जाने देते हैं। लम्बी चौड़ी नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु दिल में उस सच्चे उपास्य (ख़ुदा तआला) का प्रेम और

से इन्कार करने में जल्दी न करे ताकि ख़ुदा तआला से लड़ने वाला न ठहरे। संसार के लोग जो अंधविश्वास और अपने परम्परागत विचारों पर जमे हुए हैं वे इसको स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु अति शीघ्र ही वह समय आने वाला है जो उनकी भूल उन पर स्पष्ट कर देगा। दुनिया में एक नज़ीर (सतर्ककारी) आया परन्तु दुनिया ने उसको स्वीकार नहीं किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा। यह मनुष्य की

शेष हाशिया न. (2) →

गरिमा नहीं। मंचों (स्टेजों) पर बैठ कर बड़ी भावुकता पूर्ण नसीहत करते हैं परन्तु उनके अन्दरूनी काम और ही हैं। उनकी आँखें अदभुत हैं कि उनके दिलों का टेढ़ापन और फसादपूर्ण इरादों के बावजूद रोने की बड़ी ख़ूबी रखती हैं और उनकी ज़ुबानें अद्‌भुत हैं कि पूर्ण रूप से अज्ञान होने के बावजूद दिलों के ज्ञाता होने का दम भरती हैं। इसी प्रकार यहूदियत की आदतें हर तरफ फैली हुई दिखाई देती हैं। संयम और ख़ुदा से डरने में बड़ा अन्तर आ गया है। ईमानी कमज़ोरी ने अल्लाह की मुहब्बत को ठंडा कर दिया है। दुनिया की मुहब्बत में लोग दबे जाते हैं। अनिवार्य था कि ऐसा ही होता क्योंकि हज़रत सयैदिना और मौलाना (मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भविष्यवाणी के रूप में कह चुके हैं कि इस उम्मत पर एक ज़माना आने वाला है जिस में वह यहूदियों से अत्यन्त एकरूपता पैदा कर लेगी और वे सारे काम कर दिखायेगी जो यहूदी कर चुके हैं। यहाँ तक कि यदि यहूदी चूहे के सूराख़ में प्रविष्ट हुए हैं तो वह भी प्रविष्ट होगी। तब फारस के (ईरानी) मूल में से एक व्यक्ति ईमान की शिक्षा देने वाला पैदा होगा। यदि ईमान सुरय्या नक्षत्र में लटका होता तो वह उसे उस जगह से भी ले आता। यह भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की है जिस का भावार्थ अल्लाह के इल्हाम (ईशवाणी) ने इस विनीत पर खोल दिया और विस्तारपूर्वक उसकी वास्तविकता प्रकट कर दी और मुझ पर ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम द्वारा खोल दिया कि हज़रत मसीह पुत्र मरयम भी वस्तुतः एक ईमान की तालीम देने वाला था

बात नहीं ख़ुदा तआला की ईशवाणी और प्रतापी पालनहार की वाणी है और मैं विश्वास रखता हूँ कि उन आक्रमणों के दिन निकट हैं। परन्तु ये आक्रमण तलवार और तीर से नहीं होंगे तथा तलवारों और बन्दूकों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी अपितु आध्यात्मिक शस्त्रों के साथ ख़ुदा तआला की सहायता उतरेगी और यहूदियों से घोर युद्ध होगा। वे कौन हैं? इस ज़माना के ज़ाहिर परस्त लोग जिन्होंने सामूहिक सहमति से यहूदियों के क़दम पर क़दम रखा है। उन

शेष हाशिया न. (2) ⟶

जो हज़रत मूसा (अ:) से चौदह सौ वर्ष बाद पैदा हुआ। उस ज़माना में कि जब यहूदियों की ईमानी हालत अत्यन्त ख़राब हो गई थी और वे ईमान की कमज़ोरी के कारण उन सभी ख़राबियों में लिप्त हो गये थे जो वस्तुत: बेईमानी की शाखाएँ हैं। अत: जबकि इस उम्मत को भी अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकटन की अवधि पर प्राय: चौदह सौ वर्ष समय बीत गया तो वही आफ़तें इस में भी प्रर्याप्त मात्रा में पैदा हो गईं जो यहूदियों में पैदा हुई थीं ताकि वह भविष्यवाणी पूरी हो जो उनके बारे में की गई थी। अत: ख़ुदा तआला ने इनके लिए भी एक ईमान की तालीम देने वाला मसीह का समरूप अपनी ईश्वरीय शक्ति द्वारा भेज दिया। **मसीह जो आने वाला था यही है चाहो तो स्वीकार करो।** जिस किसी के कान सुनने के हों सुने। यह ख़ुदा तआला का काम है और लोगों की दृष्टि में अद्‌भुत। यदि कोई इस बात को झुठलाये तो पहले सत्य पुरुषों को भी झुठलाया जा चुका है। यूहन्ना अर्थात यह्या को जो ज़करिया का पुत्र था यहूदियों ने कदापि स्वीकार नहीं किया हालांकि मसीह ने उसके बारे में गवाही दी कि यह वही है जो आसमान पर उठाया गया था। जिसके पुन: आसमान से उतरने का पवित्र धर्म-ग्रन्थों में वादा था। ख़ुदा तआला सदा रूपकों से काम लेता है और स्वभाव, लक्षण और ख़ूबी और योग्यता के आधार पर एक का नाम दूसरे को प्रदान करता है। जो इब्राहीम के दिल के अनुरूप दिल रखता है वह ख़ुदा तआला के निकट इब्राहीम है। और जो उमर फ़ारूक़ का दिल रखता है वह ख़ुदा तआला के निकट

सब को अल्लाह की आसमानी तलवार दो टुकड़े करेगी और यहूदियत का स्वभाव मिटा दिया जाएगा प्रत्येक सत्य को छुपाने वाला दज्जाल (धोखेबाज़), दुनिया परस्त, एक आँखवाला जो धर्म की आँख नहीं रखता स्पष्ट अटल सबूत की तलवार से वध किया जायेगा, सच्चाई की जीत होगी और इस्लाम के लिए फिर ताज़गी और प्रकाश पूर्ण दिन आयेगा जो पहले ज़माने में आ चुका है, वह सूरज अपने पूरे प्रताप के साथ फिर चढ़ेगा जैसा कि पहले चढ़

शेष हाशिया न.(2) ⟶

उमर फ़ारूक है। क्या तुम यह हदीस पढ़ते नहीं कि यदि इस उम्मत में भी मुहद्दिस हैं जिन से अल्लाह तआला वार्ता करता है तो वह उमर है। अब क्या इस हदीस का यह अर्थ है कि मुहद्दिसियत हज़रत उमर पर समाप्त हो गयी ? कदपि नहीं. अपितु हदीस का अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति की आध्यात्मिक अवस्था हज़रत उमर की आध्यात्मिक अवस्था के अनुरूप हो गई वही ज़रूरत के समय मुहद्दिस होगा। अत: इस विनीत को भी एक बार इस बारे में इल्हाम हुआ था ''فِيْكَ مَادَّةٌ فَارُوْقِيَّةٌ' (अर्थात- तेरे अन्दर फ़ारूक़ी विशेषता है) अत: इस विनीत को दूसरे महापुरुषों से स्वाभाविक एकरूपता प्राप्त होने के अतिरिक्त, जिस का विवरण बराहीन अहमदिया में विस्तारपूर्वक वर्णित है, हज़रत मसीह के स्वभाव से एक विशेष समानता है और इसी स्वाभाविक समानता के कारण मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गया ताकि सलीबी सिद्धान्त का पूर्णतया खण्ड विखण्ड किया जाये। अत: मैं सलीब के तोड़ने और सूअरों के वध करने के लिए भेजा गया हूँ। मैं आसमान से उतरा हूँ उन पवित्र फ़रिश्तों के साथ जो मेरे दायें बायें थे। जिनको मेरा ख़ुदा जो मेरे साथ है मेरे काम के पूरा करने के लिए प्रत्येक अभिलाषी दिल में प्रविष्ट करेगा अपितु कर रहा है और यदि मैं चुप भी रहूँ और मेरी क़लम लिखने से रुकी भी रहे तब भी वे फ़रिश्ते जो मेरे साथ उतरे हैं अपना काम बन्द नहीं कर सकते। उनके हाथ में बड़ी बड़ी गदाएँ हैं जो सलीब तोड़ने और सृष्टि-पूजा के उपासना गृह को कुचलने के लिए दी गई हैं। सम्भवत: कोई बेख़बर इस

चुका है। परन्तु अभी ऐसा नहीं, ज़रूर है कि आसमान उसे चढ़ने से रोके रहे जब तक कि परिश्रम और अनथक लगन से हमारे जिगर ख़ून न हो जायें, और हम सारे आरामों को उसके प्रकट करने के लिए न त्याग दें और इस्लाम के सम्मान के लिए सारे अपमान स्वीकार न कर लें। **इस्लाम का जीवित होना हम से एक फिद्या (क़ुरबानी) मांगता है। वह क्या है ? हमारा इसी मार्ग में मरना।** यही मृत्यु है जिस पर इस्लाम का जीवन, मुसलमानों का जीवन

शेष हाशिया न. (2) ⟶

आश्चर्य में पड़े कि फ़रिश्तों के उतरने का क्या अर्थ है। अतः स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला का यह नियम जारी है कि जब कोई रसूल अथवा नबी या मुहद्दिस मानवजाति के सुधार के लिए आसमान से उतरता है तो अनिवार्य रूप से उसके साथ ऐसे फ़रिश्ते उतरा करते हैं जो तत्पर दिलों में हिदायत डालते हैं और नेकी की प्रेरणा देते हैं और निरन्तर उतरते रहते हैं जब तक कुफ्र और पथभ्रष्टता का अंधेरा दूर होकर ईमान और सच्चाई का प्रकाशमय सवेरा प्रकट हो। जैसा कि अल्लाह तअला फ़रमाता है:-

(1) تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۔ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

(अर्थात फ़रिश्ते और रूह (पवित्र आत्मा) उस में अपने रब के आदेशानुसार समस्त आदेशों के साथ उतरते हैं। शान्ति ही शान्ति है सवेरा प्रकट होने तक।-अनुवादक) अतः फ़रिश्ते और पवित्र आत्मा का अवतरण अर्थात आसमान से उतरना उसी समय होता है। जब एक महान सिद्ध पुरुष ख़िलाफ़त की पोशाक पहन कर और अल्लाह तआला की वाणी को प्राप्त करके धरती पर अवतरित होता है। पवित्र आत्मा विशेष रूप से उस ख़लीफ़ा को प्राप्त होती है और जो उसके साथ फ़रिश्ते होते हैं वे संसार के सभी तत्पर दिलों पर उतारे जाते हैं। तब संसार में जहाँ-जहाँ योग्य पात्र पाये जाते हैं सब पर उस प्रकाश का प्रतिबिम्ब पड़ता है और समस्त संसार में एक प्रकाश फैल जाता है और फ़रिश्तों के पवित्र प्रभाव से दिलों में स्वयं नेक विचार पैदा होने लगते हैं और तौहीद (एक ख़ुदा) प्यारी लगने लगती है। और सरल हृदयों में सच्चाई की चाहत और सत्य

(1)-अलक़द्र : 5,6

और जीवित ख़ुदा का प्रकटन निर्भर है और यही वह चीज़ है जिस का दूसरे शब्दों में इस्लाम नाम है। ख़ुदा तआला अब इसी इस्लाम को जीवित करना चाहता है। ज़रूर था कि वह इस महान् अभियान को सफल करने के लिए एक महानतम कारख़ाना जो प्रत्येक दृष्टिकोण से प्रभावपूर्ण हो अपनी ओर से स्थापित करता। अत: उस परम बुद्धिमान और परम शक्तिशाली (अल्लाह) ने इस विनीत को प्रजा के सुधार के लिए भेज कर ऐसा ही किया और दुनिया

शेष हाशिया न. (2) ⟶

की खोज की एक प्रेरणा फूंक दी जाती है और कमज़ोरों को शक्ति प्रदान की जाती है और प्रत्येक ओर ऐसी हवा का चलना आरम्भ हो जाता है जो उस सुधारक के दावे और उद्देश्य को सहयोग पहुँचाती है। एक अदृश्य हाथ की प्रेरणा से लोग स्वयं योग्यता की ओर खिसकते चले आते हैं और क़ौमों में एक हलचल सी आरम्भ हो जाती है। तब नासमझ लोग सोचते हैं कि दुनिया के ख़यालों ने स्वयं सच्चाई की ओर पलटा खाया है, परन्तु वास्तव में यह काम उन फ़रिश्तों का होता है जो अल्लाह के ख़लीफ़ा के साथ आसमान से उतरते हैं और सत्य को स्वीकार करने और समझने के लिए असाधारण शक्तियाँ प्रदान करते हैं, सोये हुए लोगों को जगा देते हैं, और असावधान को सावधान करते हैं और बहरों के कान खोलते हैं, मुर्दों में जीवन का प्राण फूँकते हैं और उनको जो कब्रों में हैं बाहर निकाल लाते हैं। तब लोग सहसा आँखें खोलने लगते हैं और उनके दिलों पर वे बातें खुलने लगती हैं जो पहले गुप्त थीं और वास्तव में ये फ़रिश्ते उस अल्लाह के ख़लीफ़ा से अलग नहीं होते। उसी के चेहरे की चमक और उसी के साहस के स्पष्ट लक्षण होते हैं जो अपनी आकर्षण शक्ति से प्रत्येक अनुकूलता रखने वाले को अपनी ओर खींचते हैं चाहे वह शारीरिक रूप से निकट हो अथवा दूर हो और चाहे परिचित हो अथवा पूर्ण रूप से अपरिचित और नाम तक से बेख़बर हो। अतएव उस ज़माने में जो कुछ नेकी की ओर हलचल होती हैं और सच्चाई को स्वीकार करने के लिए जोश पैदा होते हैं चाहे वे जोश एशियाई लोगों में पैदा हों अथवा

को सत्य की ओर खींचने के लिए सत्य के समर्थन और इस्लाम के प्रचार कार्य को कई शाखाओं पर विभाजित कर दिया। अत: उन शाखाओं में से एक शाखा लेखन और सम्पादन का क्रम है जिसकी व्यवस्था इस विनीत के सुपुर्द की गई तथा वे आध्यात्म ज्ञान और तत्वज्ञान सिखलाऐ गए जो मनुष्य की सामर्थ्य से नहीं अपितु केवल ख़ुदा तआला की शक्ति से ज्ञात हो सकते हैं और मानवीय प्रयत्न से नहीं अपितु रूहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) की शिक्षा

शेष हाशिया न.(2) ⟶

यूरोप के निवासियों में अथवा अमरीका के रहने वालों में। वे वास्तव में उन्हीं फ़रिश्तों की प्रेरणा से जो उस अल्लाह के ख़लीफ़ा के साथ उतरते हैं प्रकट होते हैं। यह ईश्वरीय नियम है जिस में कभी परिवर्तन नहीं पाओगे और अत्यन्त स्पष्ट और जल्द समझ में आनेवाला है। तुम्हारा दुर्भाग्य है यदि तुम ध्यान न दो। चूँकि यह विनीत सच्चाई के साथ ख़ुदा तआला की ओर से आया है इसलिए तुम सच्चाई के निशान प्रत्येक ओर से पाओगे। वह समय दूर नहीं अपितु अत्यन्त निकट है कि जब फ़रिश्तों की फ़ौजें आसमान से और एशिया और यूरोप और अमरीका के दिलों पर उतरती देखोगे। यह तुम क़ुरआन शरीफ़ से मालूम कर चुके हो कि अल्लाह के ख़लीफ़ा के अवतरण के साथ फ़रिश्तों का अवतरण अनिवार्य है ताकि दिलों को सत्य की ओर फेरें। अत: तुम इस निशान की प्रतीक्षा करो। यदि फरिश्तों का अवतरण न हुआ और उनके उतरने के स्पष्ट प्रभाव तुम ने संसार में न देखे और सत्य की ओर दिलों की हलचल को साधारण समय से अधिक न पाया तो तुम यह समझना कि आसमान से कोई नहीं उतरा, परन्तु यदि ये सभी बातें दिखाई दीं तो तुम इन्कार से बचो ताकि तुम ख़ुदा तआला के निकट अवज्ञाकारी कौम न ठहरो।

दूसरा निशान यह है कि ख़ुदा तआला ने इस विनीत को उन प्रकाशों से विशेष किया है जो चुनिंदा भक्तों को मिलते हैं जिसका दूसरे लोग मुक़ाबला नहीं कर सकते। अत: यदि तुमको सन्देह हो तो मुक़ाबले के लिए आओ और निस्सन्देह समझो कि तुम कदापि मुक़ाबला नहीं कर

से कठिनाईयों का समाधान कर दिया गया।

दूसरी शाख़ा इस कारख़ाने का विज्ञापन जारी करने का कार्यक्रम है जो अल्लाह के आदेशानुसार विवाद की पूर्णता के उद्देश्य से जारी है। और अब तक बीस हज़ार से कुछ अधिक विज्ञापन इस्लामी सबूतों के दूसरी क़ौमों पर सिद्ध करने के लिए प्रकाशित हो चुके हैं और भविष्य में आवश्यकतानुसार सदा होते रहेंगे।

शेष हाशिया न. (2) →

सकोगे। तुम्हारे पास ज़ुबानें हैं परन्तु दिल नहीं, शरीर है परन्तु जान नहीं, आखों की पुतली है परन्तु उस में प्रकाश नहीं। ख़ुदा तआला तुम्हें प्रकाश प्रदान करे ताकि तुम देख लो।

तीसरा निशान यह है कि वह चुनिंदा नबी जिस पर तुम ईमान लाने का दावा करते हो उस पवित्र नबी अलैहिस्सलाम ने इस विनीत के बारे में लिखा है जो तुम्हारी सही हदीसों में मौजूद है जिस पर आज तक तुम ने कभी ध्यान नहीं दिया। अत: तुम वस्तुत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के छुपे हुए शत्रु हो कि उनकी पुष्टि के लिए नहीं अपितु झुठलाने के लिए प्रयासरत हो। अब तुम में से बहुत से लोग क़ुफ्र का फ़तवा (निर्णय) लिखेंगे और यदि सम्भव होता तो वे वध कर देते। परन्तु यह शासन इस कौम का शासन नहीं जो उत्तेजना में बहुत अधिक और समझने में बहुत मूर्ख और नैतिक सहिष्णुता में अति पिछड़ा हुआ हो और यहूदियत की रूह को जीवित करके दिखला रहा हो। यह शासन यद्यपि ईमान की श्रेष्ठता और वरदान अपने अन्दर नहीं रखता फिर भी हेरोदेस के उस शासनकाल से जिस के साथ हज़रत मसीह पुत्र मरयम का मामला पड़ा था कई गुना अच्छा और वर्तमान समय के इस्लामी शासनों से शान्ति और भलाई फैलाने और आज़ादी देने और जनसाधारण की सुरक्षा और सुधार और न्याय प्रक्रिया की व्यवस्था और अपराधियों की पकड़-धकड़ के कार्यों की दृष्टि से बहुत उत्तम है। ख़ुदा तआला की गहन हिकमत ने जैसा कि मसीह को यहूदियों के शासनकाल में और उनकी सरकार के

तीसरी शाखा इस कारख़ाने की अतिथि और मुसाफिर और सत्य की खोज के लिए यात्रा करने वाले और दूसरे विभिन्न उद्देश्यों से आनेवाले हैं जो इस आसमानी कारख़ाना की सूचना पाकर अपनी अपनी नीयतों की प्रेरणा से भेंट करने के लिए आते रहते हैं। यह शाख़ा भी निरन्तर प्रगति पर है। यद्यपि कुछ दिनों में थोड़े कम परन्तु कुछ दिनों में अत्यधिक जोश से इसका क्रम आरम्भ हो जाता है। अतएव इन सात वर्षों में साठ हज़ार से कुछ अधिक अतिथि आये

शेष हाशिया न. (2) ⟶

अन्तर्गत नहीं भेजा था ऐसा ही इस विनीत के सम्बंध में भी यही भलाई दृष्टि में रखी गई ताकि समझने वालों के लिए निशान हो। यदि वर्तमान काल के इन्कार करने वाले मेरे साथ हँसी ठट्ठा करें तो कोई खेद नहीं क्योंकि इन से पहले जो गुज़रे हैं उन्होंने इन से भी बुरा व्यवहार अपने समसामयिक नबियों के साथ किया। मसीह से भी बहुत बार हँसी ठट्ठा हुआ। एक बार भाईयों ने ही जो एक ही माँ के पेट से पैदा हुए थे, चाहा कि उस को पागल ठहराकर बन्दीगृह में बन्द करवा दें और दूसरों ने तो कई बार उसको जान से मार देने का इरादा किया, उस पर पत्थर चलाये और अत्यन्त घृणा पूर्ण दृष्टि से उस के मुँह पर थूका। बल्कि एक बार अपने ख़याल में उसको सलीब पर चढ़ा कर वध कर दिया। परन्तु चूँकि हड्डी नहीं तोड़ी गई थी इसलिए वह एक श्रद्धालु और भले मानस के समर्थन से बच गया और जीवन के शेष दिन गुज़ार कर आसमान की ओर उठाया गया। मसीह के अनुयायियों और दिन रात के मित्रों और साथियों ने भी ठोकर खाई। एक ने तेईस रुपये रिश्वत लेकर उसको पकड़वाया और एक ने उस के सामने उसकी ओर संकेत करके उस पर लानत की और शेष हवारी (शिष्य) जो बड़ी मित्रता का दम भरते थे भाग गए और अपने दिलों में मसीह के बारे में कई प्रकार के सन्देह उन्होंने पैदा कर लिए। परन्तु चूंकि वह सच्चा था इसलिए ख़ुदा ने फिर उसके काम को मरने के पश्चात जीवित किया। मसीह का पुनर्जीवन जो ईसाईयों की धारणा में जमा हुआ है वास्तव में यह उसके धर्म के जीवन की ओर संकेत है जो

होंगे। और जितना उनमें से सचेत लोगों को भाषण द्वारा आध्यात्मिक लाभ पहुँचाया गया और उनकी कठिनाइयाँ दूर कर दी गईं और उन की कमज़ोरी को दूर कर दिया गया इसका ज्ञान ख़ुदा तआला को है, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये ज़ुबानी भाषण जो प्रश्न करने वालों के प्रश्नों के उत्तर में दिए गये अथवा दिए जाते हैं अथवा अपनी ओर से समय और परिस्थिति के अनुसार कुछ वर्णन किया जाता है। यह प्रक्रिया कुछ परिस्थितियों में लेख इत्यादि से अधिक लाभदायक, प्रभावी और शीघ्रता से दिलों में बैठने वाली प्रमाणित हुई है। यही कारण है कि सभी नबी इस शैली को अपनाते रहे हैं और ख़ुदा तआला की वाणी के सिवा जो विशेष रूप से अपितु लिखित तौर पर प्रकाशित की गई शेष जितने भी नबियों के कथन हैं वे अपने अपने समय में भाषणों की भाँति प्रसारित होते रहे हैं। नबियों का सामान्य नियम यही था कि एक अनुभवी लेक्चरार की भाँति आवश्यकतानुसार विभिन्न सभाओं और समारोहों में उनकी वर्तमान परिस्थियों के अनुकूल आत्मा से शक्ति प्राप्त करके भाषण दिया करते थे। परन्तु न इस युग के वक्ताओं की भाँति जो अपने भाषणों से केवल अपना ज्ञान प्रदर्शन करना चाहते हैं अथवा यह उद्देश्य होता है कि अपने झूठे दर्शन और तथ्य रहित तर्कों से किसी भोले भाले को अपने पेच में लायें और फिर अपने से अधिक नर्क के योग्य बनायें। अपितु नबी अत्यन्त सरल

शेष हाशिया न. (2)

मरने के पश्चात पुनः जीवित किया गया। अतएव ख़ुदा तआला ने मुझे भी ख़ुशखबरी दी कि मृत्यु के पश्चात मैं फिर तुझे जीवन प्रदान करूँगा। और फरमाया कि जो लोग ख़ुदा तआला के सानिध्यप्राप्त हैं वे मृत्यु के पश्चात पुनः जीवित हो जाया करते हैं और फरमाया कि **मैं अपनी चमक दिखलाऊँगा और अपनी क़ुदरत दिखाकर तुझे उठाऊँगा।** अतः मेरे इस पुनर्जीवन से अभिप्राय भी मेरे उद्देश्यों का जीवन है परन्तु कम हैं वे लोग जो इन भेदों को समझते हैं। इति..

वाक्य प्रकट करते और जो दिल से निकलता था वह दूसरों के दिलों में डालते थे। उनकी पवित्र वाणी ठीक परिस्थिति और आवश्यकता के समय पर होती थी और सुनने वालों को मनोविनोद और कहानियों की भाँति कुछ नहीं सुनाते थे अपितु उनको बीमार देखकर और भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक रोगों में ग्रस्त पाकर उपचार के रूप में उनको उपदेश देते थे, अथवा स्पष्ट तर्कों से उनका सन्देह दूर करते थे। उनके वार्त्तालाप में बातें कम और अर्थ अधिक होते थे। अत: यही शैली यह विनीत प्रयोग में लाता है और अतिथियों और मुसाफिरों की योग्यता के अनुसार और उनकी आवश्यकता के आधार पर और उनके रोगों को ध्यान में रख कर सदैव भाषण का द्वार खुला रहता है[3] क्यों कि बुराई को निशाना करके उसके रोकने के लिए आवश्यक उपदेशों के तीर चलाना

हाशिया न. (3) इस स्थान पर यह निराली कहानी लिखने योग्य है कि एक बार मुझे अलीगढ़ में जाने का अवसर मिला और दिमाग़ की कमज़ोरी के रोग के कारण जिसका कादियान में भी कुछ समय पहले दौरा पड़ा था, मैं इस योग्य नहीं था कि अधिक वार्तालाप अथवा कोई मानसिक परिश्रम का काम कर सकता और अभी मेरी यही अवस्था है कि मैं अधिक बात करने अथवा अत्यधिक चिन्तन-मनन की शक्ति नहीं रखता। इस अवस्था में अलीगढ़ के एक मौलवी साहिब मुहम्मद इस्माईल नामक मुझ से मिले और उन्होंने अति विनम्रता से उपदेश के लिए निवेदन किया और कहा कि लोग लम्बे समय से आपके अभिलाषी हैं। अच्छा यह है कि सब लोग एक मकान में एकत्रित हों और आप कुछ उपदेश दें। चूँकि मेरी सदा से यही चाहत और यही आन्तरिक इच्छा रही है कि सच्ची बातों को लोगों के समक्ष प्रकट करूँ, इसलिए मैंने इस निवेदन को दिल से स्वीकार किया और चाहा कि लोगों के समागम में इस्लाम की वास्तविकता वर्णन करूँ कि इस्लाम क्या चीज़ है और अब लोग इसको क्या समझ रहे हैं। मौलवी साहिब को कहा भी गया कि अल्लाह की इच्छा होगी तो इस्लाम की वास्तविकता वर्णन की जायेगी। परन्तु उसके

और बिगड़े हुए स्वभाव को ऐसे अंग की तरह पाकर उसे अपनी वास्तविक अवस्था और स्थान पर लाना– जिस प्रकार यह उपचार रोगी के सामने लाने पर सोचा जा सकता है और दूसरे किसी प्रकार से पूर्ण सम्भव नहीं। यही कारण है कि ख़ुदा तआला ने कई हज़ार नबी और रसूल भेजे और उनकी संगत प्राप्त करने का आदेश दिया ताकि प्रत्येक युग के लोग आखों देखा आदर्श पाकर और उनके व्यक्तित्व को अल्लाह की वाणी का जीवन्त रूप देख कर उनके

शेष हाशिया न. (3) →

बाद मैं ख़ुदा–तआला की ओर से रोका गया। मुझे विश्वास है कि चूँकि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए ख़ुदा तआला ने यह चाहा कि अधिक मानसिक परिश्रम करके किसी शारीरिक विपत्ति में न पड़ूँ। इसलिए उस ने उपदेश देने से मुझे रोक दिया। एक बार इस से पहले भी ऐसी ही घटना घटी थी कि मेरी कमज़ोरी की अवस्था में अतीत के नबियों में से एक नबी कश्फ़ में मुझ से मिले और मुझे सहानुभूति और उपदेश के रूप में कहा कि इतना मानसिक परिश्रम क्यों करते हो इस से तो तुम बीमार हो जाओगे। जो भी हो ख़ुदा तआला की ओर से यह एक रोक थी जिसका मौलवी साहिब की सेवा में खेद प्रकट किया गया और यह शिकायत वस्तुतः सत्य थी। जिन लोगों ने मेरी इस बीमारी के घातक दौरे देखे हैं और अधिक वार्तालाप अथवा चिन्तन मनन के बाद तत्काल ही इस बीमारी का बढ़ जाना स्वयं अपनी आँखों से देखा है वे यद्यपि अपरिचित होने के कारण मेरे इल्हामों (ईशवाणी) पर विश्वास न रखते हों परन्तु उनको इस बात पर पूर्णरूप से विश्वास होगा कि मुझे वास्तव में यही बीमारी लगी हुई है। डाक्टर मुहम्मद हुसैन ख़ान साहिब जो लाहौर के आंरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं और अब तक मेरा उपचार करते हैं उनकी ओर से सदा यही विशेषादेश है कि मानसिक परिश्रमों से रोग के समाप्त होने तक बचना चाहिए और डाक्टर साहिब मेरी इस अवस्था के पहले गवाह हैं और मेरे अधिकतर मित्र जैसे प्रिय भाई मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब जो जम्मू रियासत के उपचारक हैं जो सदा मेरी सहानुभूति में हार्दिक

अनुसरण के लिए प्रयास करें। यदि नेकों की संगत में रहना धर्म में अनिवार्य न होता तो ख़ुदा तआला अपनी वाणी को रसूलों और नबियों को भेजे बिना ही और ढंग से भी उतार सकता था अथवा केवल प्रारम्भिक काल में ही रिसालत (अल्लाह का पैग़ाम) की बात को सीमित रखता और बाद में सदा के लिए नुबुव्वत और रिसालत और वह्यी (ईशवाणी) का क्रम समाप्त कर देता परन्तु ख़ुदा तआला के परमज्ञान और बुद्धिमत्ता ने कदाचित ऐसा स्वीकार नहीं किया

शेष हाशिया न. (3) ⟶

तौर पर व्यस्त हैं और मुंशी अब्दुल हक़ साहिब अकाउँटेंट जो विशेषकर लाहौर में रहते और नौकरी का पेशा रखते हैं जिन्होंने मेरी इस बीमारी के दिनों में सेवा का ऐसा दायित्व निभाया जिसके वर्णन का मुझ में सामर्थ्य नहीं। ये सारे मेरे निष्ठावान मेरी इस अवस्था के साक्षी हैं। परन्तु खेद है कि प्रत्येक मौमिन सद्‌भावना के लिए ख़ड़ा किया गया है फिर भी मौलवी साहिब ने मेरी इस शिकायत को सद्‌भावना से दिल में जगह नहीं दी। अपितु अत्यधिक दुर्भावना के साथ मिथ्या वर्णन ठहराया। अतएव उनकी सारी वे बातें जिसको एक डाक्टर जमालुद्‌दीन नामक उनके मित्र ने उनकी अनुमति से लिख कर लोगों में फैलाया नीचे उसके उत्तर के साथ लिखता हूँ।

उसका बयानः- मैं ने उन से (अर्थात इस विनीत से अलीगढ़ में) कहा कि कल शुक्रवार है उपदेश दें। इसका उन्होंने वादा भी किया परन्तु सुबह को पर्चा आया कि मैं इल्हाम (ईशवाणी) के द्वारा उपदेश देने से रोका गया हूँ। मेरा विचार है कि भाषण देने की असमर्थता और परीक्षा के भय से इन्कार कर दिया।

मेरा बयानः- मौलवी साहिब का यह विचार दुर्भावना के अतिरिक्त कुछ नहीं जो धार्मिक विधान के अनुसार अनुचित है और स्वच्छ स्वभाव वाले आदमियों का काम नहीं और कोई यथार्थता और वास्तविकता नहीं रखता। यदि मैं केवल अलीगढ़ में आकर विशेष रूप से इसी अवसर पर इल्हाम का दावेदार बनता तो निस्सन्देह दुर्भावना के लिए एक कारण

और आवश्यकता के समय में अर्थात जब कभी अल्लाह के प्रति प्रेम और अल्लाह की उपासना और संयम और पवित्रता इत्यादि अनिवार्य बातों में कमी आती रही है पवित्र लोग ख़ुदा तआला से वह्यी पाकर आदर्शरूप में संसार में आते रहे हैं और ये दोनों मामले अनिवार्य हैं। यदि ख़ुदा तआला को सदा के लिए मानवजाति के सुधार की ओर ध्यान है तो यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे लोग भी सदा के लिए आते रहें कि जिन को ख़ुदा तआला ने अपनी

शेष हाशिया न. (3) ⟶

हो सकता था और अवश्य सोचा जा सकता था कि मौलवी साहिब के ज्ञान की ऊँची प्रतिष्ठा देखकर और उनके कारनामों की महानता और प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर डर गया और शिकायत प्रस्तुत करके और बहाने बनाकर अपना पीछा छुड़ाया। परन्तु मैं तो इस इल्हाम के दावे को अलीगढ़ की यात्रा से छः साल पहले समस्त देश में प्रकाशित कर चुका हूँ और बराहीन अहमदिया के अधिकतर स्थान इस से भरे हुए हैं। यदि मैं भाषण देने में असमर्थ होता तो वे किताबें जो मेरी ओर से भाषण के रूप में जनसभा के सम्मुख और हज़ारों समर्थक और विरोधियों की सभा में लिख कर प्रकाशित हुई हैं जैसा कि सुरमा चश्म आर्य वह किस प्रकार मेरी ऐसी कमज़ोर भाषण शैली से निकल सकती थीं और किस प्रकार यह मेरा महान मौखिक भाषण का क्रम जिस में हज़ारों भिन्न-भिन्न स्वभाव और सामर्थ्य के आदमियों के साथ सदा सर खपाई करनी पड़ती है आजतक चल सकता। ख़ेद हज़ार ख़ेद इस युग के अधिकतर मौलवियों पर कि द्वेष की अग्नि अन्दर ही अन्दर उनको खा गई है। लोगों को तो ईमान की विशेषता और भ्रातृभाव और परस्पर उत्तम धारणा रखने का पाठ पढ़ाते हैं और मंच पर चढ़ कर इस बारे में अल्लाह तआला की वाणी की आयतें सुनाते हैं परन्तु स्वयं इन आदेशों को स्पर्श तक नहीं करते। हे हज़रत ख़ुदा तआला आपकी आँख खोले। क्या यह सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने किसी ईशवाणी प्राप्त भक्त को किसी कारणवश एक काम करने से रोक दे और सम्भवतः इस रोक का दूसरा कारण यह भी

विशेष कृपा से ज्ञानदृष्टि प्रदान की हो और अपनी इच्छा के पथ पर कायम रखा हो। नि:सन्देह यह बात विश्वसनीय और सर्वमान्य विषय में से है कि यह मानवजाति के सुधार का असाधारण कार्यभार केवल कागज़ों के घोड़े दौड़ाने से ही सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके लिए इसी मार्ग पर चलना ज़रूरी है जिस पर प्रारम्भ से ख़ुदा तआला के पवित्र नबी चलते आये हैं और इस्लाम ने अपना क़दम रखते ही इस प्रभावपूर्ण व्यवस्था को ऐसी दृढ़ता और सशक्त

शेष हाशिया न.③ ⟶

होगा कि ताकि आपकी आन्तरिक विशेषताओं की परीक्षा हो जाये और जो लोग आप के हमरंग और आपके सहधर्मी हैं उनके दूषित मवाद को भी इस आयोजन द्वारा बाहर निकाला जाये। रही यह बात कि आपके ज्ञान की प्रतिष्ठा और रोब से मैं डर गया, तो इसके उत्तर में आप अवश्य समझें कि जो लोग अंधेरे में और मानसिक अन्धेपन में ग्रस्त हैं यदि संसार के समस्त दर्शन शास्त्री और विज्ञान के ज्ञाता भी हों तब भी मेरी दृष्टि में एक मरे हुए कीड़े से उनका अधिक मूल्य नहीं। परन्तु आप उस दर्जा के ज्ञानी भी नहीं केवल रूढ़िवादी शुष्क मुल्ला हैं और वही दुष्टता जो अंधविश्वासी मुल्लाओं में हुआ करती है आप के भीतर मौजूद है। आप को याद रहे कि कई बार मेरे पास ऐसे अन्वेषक और विशेषज्ञ और विस्तृत जानकारी रखने वाले लोग आते और ज्ञान की गूढ़ता से लाभान्वित होते हैं कि यदि मैं उनकी तुलना में आपको नौसिखिया भी कहूँ तो यह कह कर भी आपको वह सम्मान दूँगा जिसके आप योग्य नहीं।

अब भी यदि आप का संदेह दूर न हो और दुर्भावना का जोश कम न हो तो फिर मैं ख़ुदा तआला की सहायता और दया से आपके मुक़ाबिले पर भाषण देने को भी तैयार हूँ। मैं बीमारी के कारण अब कोई दूर की यात्रा तो नहीं कर सकता परन्तु यदि आप सहमत हों तो अपने किराया से लाहौर जैसे पंजाब की राजधानी में आपको इस काम और इस परीक्षा के लिए कष्ट दे सकता हूँ। और पूर्ण संकल्प से वचनबद्ध हूँ और आपके उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।

रूप में जारी रखा है कि इसका उदाहरण दूसरे धर्मों में कदापि नहीं पाया जाता। कौन इस बड़ी जमाअत का दूसरी जगह अस्तित्व दिखा सकता है जो संख्या में दस हज़ार से भी अधिक बढ़ गई थी और आस्था, निष्ठा, विनीतता, कठोर परिश्रम, पूर्ण लगन से सत्य की प्राप्ति के लिए और सच्चाई को जानने के लिए नबी की चौखट पर दिन रात पड़ी रहती थी। नि:सन्देह हज़रत मूसा को भी एक जमाअत मिली थी परन्तु वह कैसी और कितनी अवज्ञाकारी और

शेष हाशिया न.(3) ⟶

उसका बयानः-यह व्यक्ति नालायक है शैक्षणिक योग्यता नहीं रखता।

मेरा बयानः- हे हज़रत ! मुझे संसार की किसी ज्ञान और बुद्धिमत्ता का दावा नहीं। इस संसार की बुद्धिमत्ता और चालाकियों का मैं क्या करूँ कि वे आत्मा को प्रकाशित नहीं कर सकतीं, आन्तरिक गंदगी को वे धो नहीं सकतीं, विनम्रता और विनय भाव को पैदा नहीं कर सकतीं अपितु ज़ंग से ज़ंग चढ़ाती और क़ुफ्र पर क़ुफ्र बढ़ाती हैं। मेरे लिए यह पर्याप्त है कि अल्लाह की कृपा ने मेरा हाथ थामा और वह ज्ञान प्रदान किया जो कि मदरसों से नहीं अपितु आसमानी शिक्षक से प्राप्त होता है। यदि मुझे निरक्षर कहा जाये तो इस में मेरा क्या अपमान है अपितु गौरव की बात, क्योंकि मेरा और समस्त मानवजाति का पथ-प्रदर्शक जो समस्त मानवजाति के सुधार के लिए भेजा गया वह भी निरक्षर ही था। मैं उस खोपड़ी को कदापि मान-योग नहीं समझूँगा जिस में ज्ञान का घमण्ड है परन्तु उसका बाहर और अन्दर अंधेरे से भरा हुआ है। क़ुरआन शरीफ़ को खोलकर गधे के उदाहरण पर ध्यान दो, क्या यह पर्याप्त नहीं ?

उसका बयानः- मैं ने इल्हाम के बारे में उस से कुछ प्रश्न किए, कुछ निरर्थक उत्तर देकर चुप्पी साध ली।

मेरा बयानः- मुझे याद है कि बहुत अर्थपूर्ण उत्तर दिया गया था और ऐसे व्यक्ति के लिए कि जो थोड़ी सी भी बुद्धि और न्याय रखता हो पर्याप्त था। परन्तु आप ने न समझा, इस में किस की अयोग्यता प्रकट हुई,

विद्रोही और आध्यात्मिक संगत साधना और सत्य पर कायम रहने से वञ्चित थी। इस बात को बाइबल के पढ़ने और यहूदियों के इतिहास पर दृष्टि डालने वाले अच्छी प्रकार जानते हैं परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जमाअत ने अपने प्रिय रसूल के मार्ग में ऐसी एकता और आध्यात्मिक एकरूपता पैदा कर ली थी कि इस्लामी भाई-चारा की दृष्टि से वास्तव में एक शरीर की भाँति हो गई थी और उनके दैनिक व्यवहार और जीवनशैली

शेष हाशिया न. (3) ⟶

आपकी अथवा किसी और की। वही प्रश्न किसी समाचार पत्र में छाप दीजिए और दोबारा अपनी तीव्र बुद्धि की परीक्षा कराइये।

उसका बयान:- कदापि विश्वास नहीं हो सकता कि ऐसी उत्तम पुस्तकों के यही हज़रत लेखक हैं।

मेरा बयान:- आप क्या विश्वास करेंगे यह विश्वास तो मक्का के उन काफ़िरों को भी नहीं हुआ जिन्होंने आँहज़रत[स.अ.व] को अपनी आँखों से देखा था और आन्तरिक रूप से घोर अन्धे होने के कारण उन पर नबी के चमत्कार खुल न सके और यही कहते रहे कि ये महान् बातें जो उस के मुँह से निकलती हैं और यह क़ुरआन जो अल्लाह के बन्दों को सुनाया जाता है ये समस्त पंक्तियाँ वस्तुतः कुछ और लोगों की रचनाएँ हैं जो गुप्त रूप से सुबह और शाम उसको सिखाई जाती हैं और एक प्रकार से उन क़ुफ़्फ़ार ने भी सच कहा और मौलवी साहिब के मुँह से भी सच ही निकला, क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ की वाणी तो निस्सन्देह सरलता और सुगमता में आँहज़रत की सोचने की शक्ति से बहुत ऊपर अपितु समस्त मानवजाति की शक्ति से ऊपर और महान् है। और परमज्ञाता और सर्वशक्तिमान के सिवा और किसी से वह वाणी बन नहीं सकती। इसी प्रकार वे किताबें जो इस विनीत ने लिखकर प्रकाशित की हैं वास्तव में ये समस्त अदृश्य शक्ति की सहायता का परिणाम है और इस विनीत की सामर्थ्य और योग्यता से ऊपर और धन्यवाद का स्थान है कि मौलवी साहिब की आलोचना से एक भविष्यवाणी भी जो बराहीन अहमदिया में

और अन्दर और बाहर में नुबुव्वत के प्रकाश ऐसे रच गये थे कि मानो वे सभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। अतः यह महान चमत्कार आन्तरिक बदलाव का जिस के द्वारा घोर मूर्ति पूजक अल्लाह के पूर्ण आराधक बन गये और नित्य सांसारिक बातों में मगन रहने वाले सच्चे ख़ुदा से ऐसा सम्बंध स्थापित कर गये कि उस के मार्ग में पानी की भाँति अपने रक्त बहा दिए। यह वस्तुतः एक सच्चे और सम्पूर्ण नबी की सँगत में

शेष हाशिया न. (3) →

लिखित है पूरी हुई । अर्थात कुछ लोग इस लेख को पढ़कर कहेंगे कि यह किताब उस व्यक्ति की रचना नहीं बल अआनहू अलैहि क़ौमुन आख़रून (देखो बराहीन अहमदिया का पृष्ठ 239) (अर्थात बल्कि इसकी सहायता किन्हीं और लागों ने की है।)

उसका बयानः- सय्यद अहमद अरब जिनको मैं विश्वसनीय मानता हूँ उन्होंने मुझे सीधे-सीधे बताया कि मैं दो महीने तक उनके पास उनके विशेष अनुयायियों के बीच में रहा और समय-समय पर खोज और जाँच की दृष्टि से प्रत्येक विशेष अवसर पर उपस्थित रह कर जाँचा तो प्रमाणित हुआ कि वास्तव में उनके पास नक्षत्र ज्ञान यन्त्र मौजूद हैं वह उन से काम लेते हैं।

मेरा बयानः-

تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۔①

तआलौ नदओ अब्नाअना व अब्नाअकुम वा निसाअना व निसाअकुम व अन्फ़ुसना व अन्फ़ुसकुम सुम्मा नब्तहिल फ़ नज्अल लाअनतल्लाहि अलल काज़िबीन (आले इमरान, रुकूअ-6)

(अर्थातः- आओ हम अपने बेटों को बुलायें और तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को और तुम अपनी औरतों को, और हम अपनी जानों को और तुम अपनी जानों को, फिर गिड़गिड़ाकर दुआ करें और

①-आले इमरान : 62

निष्ठापूर्वक जीवनयापन करने का परिणाम था। अतः इसी कारण यह विनीत इस क्रम को क़ायम रखने के लिए नियुक्त किया गया है और चाहता है कि संगत में रहने वालों का क्रम और भी अधिक विस्तार के साथ बढ़ा दिया जाये और ऐसे लोग दिन रात संगत में रहें कि जो ईमान, प्रेम और विश्वास के बढ़ाने के लिए शौक रखते हों और उन पर वे प्रकाश प्रकट हों कि जो इस विनीत पर प्रकट किए गये हैं और वह आनन्द उनको मिले जो इस विनीत को प्रदान

शेष हाशिया न.(3) →

झूठों पर अल्लाह की लानत डालें।) मेरी ओर से वस्तुतः यही उत्तर है जो मैं ने अल्लाह की आयतों के माध्यम से लिख दिया और मुझे कदाचित याद नहीं कि वह सय्यद अहमद साहिब कौन बुज़ुर्ग थे जो दो महीने तक मेरे पास रहे। इस बात का प्रमाण देना मौलवी साहिब के ज़िम्मे है कि उनको मेरे सामने प्रस्तुत करें ताकि पूछा जाये कि उन्होंने कौन से यन्त्र को देखा था और जबकि मैं अभी तक जीवित मौजूद हूँ। इस अवस्था में मौलवी साहिब दो महीने तक स्वयं ही रह कर देख लें किसी दूसरे अरबी अथवा ग़ैर अरबी के माध्यम की क्या आवश्यकता है।

उसका बयानः- मुझे इल्हाम (ईशवाणी) के शब्दों पर ध्यान देने से कदाचित विश्वास नहीं होता कि वे इल्हाम हैं।

मेरा बयानः- उन लोगों को भी विश्वास नहीं होता था जिन लोगों के सम्बंध में अल्लाह तआला फ़रमाता है ①كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا (अर्थात- उन्होंने हमारे निशानों को सख़्ती से झुठलाया) फिरऔन को विश्वास न हुआ। यहूदियों के फ़क़ीहों और काहिनों को विश्वास न हुआ, अबू जहल, अबू लहब को विश्वास न हुआ। परन्तु उनको (विश्वास) हुआ जो दिल के सरल और स्वभाव के स्वच्छ और पवित्र थे।

ایں سعادت بزور بازو نیست — تا نہ بخشد خدائے بخشندہ ②

उसका बयानः- दावेदार होना चमत्कार के विपरीत है और यह कहना कि जिसको इन्कार हो आकर देखे ये झूठे दावे हैं।

---

①-सूरहः अन्नबा :29 ②-यह सौभाग्य स्वयं के प्रयास द्वारा कदापि प्राप्त नहीं हो सकता जब तक परमेश्वर स्वयं उस पर दया न करे (अनुवादक)

किया गया है ताकि इस्लाम का प्रकाश विस्तारपूर्वक संसार में फैल जाये और घृणा और अपमान का काला दाग़ मुसलमानों के माथे से धोया जाये। इसी की ख़ुशख़बरी देकर ख़ुदा तआला न मुझे भेजा और कहा कि **बख़राम कि वक़्त तू नज़दीक रसीद व पाए मुहम्मदियाँ बर मनार बुलंद तर मुहकम उफ़ताद**। अर्थात धन्य हो कि तेरा समय निकट आ गया है और मुहम्मद(सल्ल) के पैर ऊँचे मीनार पर दृढ़तापूर्वक जम गये हैं।

शेष हाशिया न. (3) →

मेरा बयान:- ये बातें मनुष्य की ओर से नहीं अपितु उस की ओर से हैं जिसको प्रत्येक दावा पुहँचता है। फिर कौन सच्चाई को मानने वाला उनको झूठ कह सकता है। हाँ यह सत्य है कि किसी क़ुदरत से बढ़ कर बात का दावा कोई नबी नहीं कर सकता। परन्तु क्या ऐसा दावा किसी नबी, रसूल या मुहद्दिस (जिससे ख़ुदा वार्ता करे) के माध्यम से ख़ुदा तआला की ओर से भी उचित नहीं ?

उसका बयान:- मैं मुलाक़ात करने से पूरी तरह आस्थाहीन हो गया हूं। मेरे विचार में जो एक ख़ुदा को माननेवाला उन से मुलाक़ात करेगा उनका अनुयायी न रहेगा। नमाज़ उनकी अन्तिम समय में होती है जमाअत के पाबन्द नहीं।

मेरा बयान:- मौलवी साहिब की आस्था न रहने की तो मुझे परवाह नहीं। परन्तु उनके झूठ और जालसाज़ी और अत्यधिक दुर्भावनाओं पर बहुत आश्चर्य है। हे ख़ुदावन्द करीम ! इस उम्मत पर दया कर जिसके मार्गदर्शक और अगुवा और संरक्षक ऐसे मौलवी समझे गये हैं। अब पाठकगण इस आपत्ति पर भी ध्यान दें जो कृपणता और द्वेष भाव के जोश से मौलवी साहिब के मुँह से निकली। स्पष्ट है कि यह विनीत केवल कुछ दिनों तक मुसाफिर के रूप में अलीगढ़ में ठहरा था और जो यात्रियों के लिए इस्लामी शरीयत ने सुविधाऐं प्रदान की हैं और उन की सदा के लिए अवमानना करना एक नास्तिकता का मार्ग घोषित किया है इन सब बातों को ध्यान में रखना मेरे लिए ज़रूरी था। अत: मैं ने वही किया जो करना

चौथी शाखा इस कारख़ाने की, वे पत्र हैं जो सच्चाई के अभिलाषी अथवा विरोधियों के नाम लिखे जाते हैं। अतएव अब तक उपर्युक्त अवधि में नब्बे हज़ार से भी कुछ अधिक पत्र आये होंगे जिनका उत्तर लिखा गया सिवाए कुछ पत्रों के जो निरर्थक और अनावश्यक समझे गये और यह क्रम भी नियमित रूप से जारी है और प्रत्येक महीने में प्राय: तीन सौ से सात सौ अथवा हज़ार तक पत्रों का आदान प्रदान हो जाता है।

शेष हाशिया न. (3) ⟶

चाहिए था और मैं इस से इन्कार नहीं कर सकता कि मैं ने उन कुछ दिनों तक ठहरने की अवस्था में कई बार सुन्नत के रंग में दो नमाज़ों को जमा कर लिया है और कभी ज़ुहर की अन्तिम समय पर ज़ुहर और अस्र दोनों नमाज़ों को इकट्ठे करके पढ़ा है। परन्तु एक ख़ुदा के उपासक हज़रत तो कभी-कभी घर में भी नमाज़ों को इकट्ठा करके पढ़ लेते हैं और यात्रा और वर्षा के बिना ही यह कार्य करते हैं। मैं इस से भी इन्कार नहीं कर सकता कि मैं इन कुछ दिनों में नियमित रूप से मस्जिदों में उपस्थित नहीं हुआ परन्तु अपनी बीमारी और यात्रा की अवस्था में रहते हुए भी पूर्णरूप से त्यागा भी नहीं। अतएव मौलवी साहिब को ज्ञात होगा कि उनके पीछे भी जुमा की नमाज़ पढ़ी थी जिसके अदा हो जाने में अब मुझे संदेह हो रहा है। यह सत्य और पूर्ण सत्य है कि मैं सदा अपनी यात्रा के दिनों में मस्जिदों में उपस्थित होना उचित नहीं समझता हूँ परन्तु अल्लाह की पनाह, इसका कारण आलस्य अथवा अल्लाह के आदेशों की अवमानना नहीं है। अपितु वास्तविक कारण यह है कि इस युग में हमारे देश की अधिकतर मस्जिदों की अवस्था अत्यन्त ख़राब और दुखदायी हो रही है। यदि इन मस्जिदों में जाकर स्वयं इमामत की इच्छा की जाये तो वे जो इमामत के लिए पहले से नियुक्त हैं अति अप्रसन्न और नीले पीले हो जाते हैं और यदि उनके पीछे पढ़ी जाये तो नमाज़ के अदा हो जाने में मुझे संदेह है, क्योंकि स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि उन्होंने (इमामत) (नमाज़ की अगुवाई) को एक व्यवसाय के तौर पर अपना रखा है और वे पाँच समय जाकर नमाज़ नहीं

पाँचवीं शाखा इस कारख़ाने की जो ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष वह्यी और इल्हाम (ईशवाणी) द्वारा स्थापित की, अनुयायियों और बैअत करने वालों का क्रम है। अतएव उसने इस सिलसिला के स्थापित करने के समय मुझे फ़रमाया कि धरती में पथभ्रष्टता का तूफान उठा है तू इस तूफान के समय में यह नौका निर्माण कर। जो व्यक्ति इस नौका में सवार होगा वह डूबने से बचाया जायेगा और जो इन्कार करेगा उसके लिए मृत्यु अनिवार्य है और फ़रमाया कि जो व्यक्ति तेरे हाथ में हाथ देगा उसने तेरे हाथ में नहीं

शेष हाशिया न. 3

पढ़ते अपितु एक दूकान है कि उन समयों में जाकर खोलते हैं और उसी दूकान पर उनका और उनके परिवार का गुज़ारा है। अतएव इस व्यवसाय से अपदस्थ और नियुक्ति के समय बात मुकद्दमों तक पहुँचती है और मौलवी साहिबान इमामत की डिग्री कराने के लिए अपील के बाद अपील करते फिरते हैं। अत: यह इमामत नहीं यह अवैध कमाई का एक अनुचित मार्ग है। क्या आप भी ऐसी मानसिक दुविधा में फंसे हुए नहीं? फिर क्यों कर कोई व्यक्ति जानबूझ कर अपना ईमान नष्ट करे। मस्जिदों में ढोंगियों का एकत्रित होना, इस सम्बन्ध में हमारे नबी[स.अ.व.] की हदीसों में अन्तिम युग की अवस्था के अन्तर्गत वर्णन किया गया है वह भविष्यवाणी इन्ही मुल्ला साहिबों के बारे में है जो मेहराब (इमाम के खड़े होने की जगह) में खड़े होकर जुबान से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते और दिल में रोटियाँ गिनते हैं और मैं नहीं जानता कि ज़ुहर और अस्र अथवा मग़रिब और इशा को यात्रावस्था में इकट्ठा करके पढ़ना कब से मना हो गया और किस ने देर से पढ़ने को अनुचित घोषित किया। यह आश्चर्यपूर्ण बात है कि आपके निकट अपने मुर्दा भाई का मांस खाना तो वैध है परन्तु यात्रावस्था में ज़ुहर और अस्र को एक साथ पढ़ना पूर्ण निषिद्ध है।

اتقوا اللّٰہ ایھا الموحدون فان الموت قریب واللّٰہ یعلم ما تکتمون۔

(अनुवाद:- हे एक ख़ुदा के उपासको ! अल्लाह से डरो, क्योंकि मृत्यु निकट है और अल्लाह उसको जानता है जो तुम छुपाते हो।) (इसी से)

अपितु ख़ुदा तआला के हाथ में हाथ दिया और उस ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि मैं तुझे मृत्यु प्रदान करूँगा और अपनी ओर उठाऊँगा परन्तु तेरे सच्चे अनुयायी और निष्ठावान प्रलय के दिन तक रहेंगे और सदा इन्कार करने वालों पर उन्हें विजय प्राप्त रहेगी।

यह पाँच प्रकार का कार्यक्रम है जो ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से क़ायम किया। यद्यपि एक ऊपरी दृष्टि रखने वाला व्यक्ति केवल प्रकाशन के कार्य को ज़रूरी समझेगा और दूसरी शाखाओं को अनावश्यक और बेफायदा समझेगा परन्तु ख़ुदा तआला की दृष्टि में ये सारे ज़रूरी हैं। और जिस सुधार के लिए उसने इच्छा रखी है वह सुधार इन पाँचों प्रक्रियाओं के बिना सम्भव नहीं हो सकता। यद्यपि यह समस्त कार्य ख़ुदा तआला की विशेष सहायता और विशेष कृपा पर छोड़ा गया है और इसको पूर्ण करने के लिए वही पर्याप्त और उसी के ख़ुशख़बरी पर आधारित वादे तसल्ली देने वाले हैं। परन्तु उसी के आदेश और प्रोत्साहन से मुसलमानों को सहयोग की ओर ध्यान दिलाया जाता है जैसा कि ख़ुदा के सभी नबी जो गुज़र चुके हैं कठिनाइयों के आने के समय ध्यान दिलाते रहे हैं। अत: उसी ध्यान दिलाने के उद्देश्य से कहता हूँ कि यह बात स्पष्ट है कि इन पाँचों शाख़ाओं के उत्तम ढंग और विस्तृत रूप से जारी रहने के लिए मुसलमानों की कितनी सामूहिक सहायता आवश्यक है। उदाहरण के रूप में एक प्रकाशन के कार्य पर ध्यान दे कर देखो कि यदि हम पूरे-पूरे प्रकाशन के उद्देश्य से इस सेवा को अपने ज़िम्में लें तो उस को पूरा करने के लिए कितनी आर्थिक साधनों की हमें आवश्यकता होगी, क्योंकि यदि प्रकाशन को पूरा करना ही हमारा वास्तविक उद्देश्य है तो हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हमारी धार्मिक पुस्तकें जो खोज और चिन्तन-मनन के रत्नों से परिपूर्ण और सत्य के चाहने वालों को सन्मार्ग की ओर खींचने वाली हैं जल्दी से और अधिक संख्या में ऐसे लोगों को पहुँच जाएँ जो बुरी शिक्षाओं से प्रभावित होकर घातक रोगों में गिरफ्तार अथवा प्राय: मृत्यु के निकट पहुँच

गए हैं और हर समय यह बात हमारे दृष्टिगत रहनी चाहिए कि जिस देश की वर्तमान परिस्थिति पथ–भ्रष्टता के विनाश पूर्ण विष के कारण अत्यन्त ख़तरे में पड़ गई हो अविलम्ब हमारी पुस्तकें इस देश में फैल जाएँ और प्रत्येक सत्य के जिज्ञासु के हाथ में वह पुस्तकें दिखाई दें, परन्तु स्पष्ट है कि इस उद्देश्य का इस प्रकार पूर्ण रूप से प्राप्त होना कदापि संभव नहीं कि हम सदा दिल के अन्दर यही बात रखें कि हमारी पुस्तकें बिक्री हो कर छपती रहें। केवल बिक्री के लिए किताबों को छापना और मनोकामना के कारण धर्म को सांसारिक बातों में घुसेड़ देना अत्यन्त निकम्मा और आपत्तिजनक तरीका है जिस की बुराई के कारण न हम जल्दी से अपनी किताबें संसार में फैला सकते हैं और न पर्याप्त संख्या में वे किताबें लोगों को दे सकते हैं। निस्संदेह यह बात सच और नितांत सच है कि जिस प्रकार हम यदि एक लाख पुस्तकें निशुल्क वितरित करें तो केवल बीस दिन में वह सारी पुस्तकें दूर–दूर के देशों में पहुँचा सकते हैं और साधारणतया प्रत्येक सम्प्रदाय में और प्रत्येक स्थान में फैला सकते हैं और प्रत्येक सत्य के अभिलाषी और सच्चाई के खोजी को दे सकते हैं। ऐसी और इस प्रकार की उच्च स्तर की कार्यवाही मूल्य ले कर देने की अवस्था में सम्भवत: बीस वर्ष की अवधि तक भी हम नहीं कर सकेंगे। बिक्री की अवस्था में किताबों को संदूक में बन्द कर के हम को ख़रीदारों की प्रतीक्षा करना चाहिए कि कब कोई आता है अथवा पत्र भेजता है तो सम्भव है इस लम्बे प्रतीक्षा काल में हम स्वयं इस संसार से चल बसें और किताबें संदूकों में बन्द की बन्द रहें। अत: क्योंकि बिक्री का दायरा अत्यन्त तंग है और मूल उद्देश्य को हानि पहुँचाने वाला है और कुछ वर्षों के काम को सैंकड़ों वर्षों तक डालता है और मुसलमानों में से ऐसा कोई विशाल हृदयी और साहसी अमीर भी अब तक इस ओर आकृष्ट नहीं हुआ कि हमारी नवीन पुस्तकों की बहुत सी प्रतियाँ ख़रीद कर केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए वितरण करता और इस्लाम में ईसाई मिशन की भाँति कोई सोसाइटी भी नहीं जो इस

कार्य के लिए सहयोग दे सके[4] और आयु का भी भरोसा नहीं। फिर भी लम्बी आयु की आशा लेकर कोई लम्बे समय की प्रतीक्षा में रहे। अतएव मैंने अपनी समस्त किताबों में प्रारम्भ से नियमित रूप से यही निर्धारित कर रखा है कि जहाँ तक सम्भव है किताबों का बहुत सा भाग निशुल्क वितरित कर दिया जाये ताकि शीघ्रता के साथ और अधिक से अधिक ये किताबें जो सच्चाई के प्रकाश से भरी हुई हैं संसार में फैल जायें, परन्तु चूँकि मेरी अपनी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं इस महान् दायित्व को अकेले उठा सकता, दूसरी शाखाओं के बड़े खर्च भी इस शाखा के साथ जुड़े हुए थे इस लिए यह पुस्तक प्रकाशन का काम एक समय तक चलकर आगे रुक गया जो आज तक रुका हुआ है। ख़ुदा तआला ने इस सिलसिले की सभी शाखाओं को एक ही दृष्टि से देखा है और समानता के साथ उन सब की पूर्णता और उन सब की स्थापना चाहता है। परन्तु इन पाँचों शाख़ाओं के खर्च इतने हैं कि जिनके लिए निष्ठावान लोगों का विशेष ध्यान और सहानुभूति की आवश्यकता है। यदि मैं इन धार्मिक खर्चों का वास्तविक विवरण लिखूँ तो बहुत लम्बा हो जायेगा। परन्तु हे भाईयो ! तुम नमूना के रूप में केवल आने वालों और ठहरने वालों के ही क्रम पर दृष्टि डालकर देखो कि अब तक सात वर्ष की अवधि में साठ हज़ार के निकट अथवा इस से कुछ अधिक अतिथि आये हैं। अब तुम

हाशिया न. [4] बताया जाता है कि ब्रिटिश और फारन बाइबल सोसाइटी ने प्रारम्भ से अर्थात गत 21 वर्ष से ईसाई धर्म के समर्थन में सात करोड़ से भी अधिक पुस्तकें संसार में वितरित की हैं। वर्तमान समय के धनवान परन्तु सुस्त मुसलमानों को यह लेख जो अक्तूबर और नवम्बर 1890 ई. के समाचार पत्रों में छप कर प्रकाशित हुआ है ध्यानपूर्वक और शर्म के साथ पढ़ना चाहिए, क्या ये किताबें बेचने वालों के हाथ से प्रकाशित हुई हैं अथवा एक कौम (जाति) की कर्मठ सोसाईटी ने अपने धर्म के सहयोगार्थ मुफ़्त बाँटी हैं। (इसी से)

अनुमान लगा सकते हो कि इन सम्माननीय अतिथियों की सेवा, भोजन और जलपान में क्या कुछ खर्च हुआ होगा और उनके सर्दी और गर्मी के आराम के लिए आवश्यक तौर पर क्या कुछ बनाना पड़ा होगा। निश्चित रूप से एक दूरदर्शी व्यक्ति आश्चर्य चकित होगा कि इतने अधिक लोगों के आतिथ्य के समस्त संसाधन और आवश्यकताऐं समय-समय पर किस प्रकार पूरी हुई होंगी और आगे किस आधार पर ऐसा महान कार्य जारी है। ऐसा ही वे बीस हज़ार विज्ञापन जो अंग्रेज़ी और उर्दू में छापे गये और फिर बारह हज़ार से कुछ अधिक विरोधियों के मुखियों के नाम रजिस्ट्री कराकर भेजे गए। भारतवर्ष में एक भी ऐसा पादरी न छोड़ा जिसके नाम वे रजिस्ट्री किये हुए विज्ञापन न भेजे गये हों। अपितु यूरोप और अमेरिका के देशों में भी ये विज्ञापन रजिस्ट्री के द्वारा भेज कर विवाद को पूर्ण कर दिया गया। क्या इन ख़र्चों पर ध्यान देने से यह आश्चर्य की बात नहीं लगती कि इस थोड़ी सी पूँजी के साथ किस प्रकार इन खर्चों को उठाया जा रहा है और ये तो बड़े-बड़े ख़र्चे हैं, यदि इन खर्चों को ही जांचा जाए जो प्रत्येक महीने में पत्रों के भेजने में उठाने पड़ते हैं तो वह भी इतनी अधिक रक़म निकलेगी कि जिसके निरन्तर जारी रहने के लिए अभी तक कोई सहयोग का साधन नहीं। जो लोग सिलसिला बैअत में प्रविष्ट हो कर सत्य के पाने के उद्देश्य से असहाबे सुफ्फा (हर समय आँहज़रत स.अ.व. के पास रहने वाले) की भाँति मेरे पास ठहरना चाहते हैं उनके निर्वाह के लिए भी मेरी आसमान की ओर दृष्टि है और मैं जानता हूँ कि इन पाँचों शाख़ाओं के क़ायम रखने का साधन वह सर्वशक्तिमान (अल्लाह) निकाल देगा जिसकी विशेष इच्छा से इस कारख़ाना की नींव पड़ी है, परन्तु प्रचार के दृष्टिकोण से ज़रूरी है कि क़ौम को इस से अवगत कर दें।

मैंने सुना है कि कुछ अनभिज्ञ लोग मेरे बारे में यह आरोप प्रकाशित करते हैं कि किताब बराहीन अहमदिया का मूल्य और कुछ मात्रा में चन्दा भी प्राय: तीन हज़ार रुपये लोगों से वसूल हुआ ..... परन्तु अब तक किताब सम्पूर्ण रूप

से नहीं छपी। मैं इसके उत्तर में उन पर स्पष्ट करता हूँ कि रुपया जो लोगों से वसूल हुआ वह केवल तीन हज़ार नहीं अपितु इसके अतिरिक्त सम्भवत: प्राय दस हज़ार आया होगा कि जो न किताब के लिए चन्दा था और न किताब के मूल्य स्वरूप दिया गया था अपितु कुछ दुआ की इच्छा रखने वालों ने भेंट स्वरूप दिया अथवा कुछ दोस्तों ने प्रेम के कारण सेवा की। अत: वह सब इस कारख़ाना के ज़रूरी और नियमित रूप से होने वाले कामों में समय-समय पर खर्च होता रहा और चूँकि अल्लाह की हिकमत ने किताब के प्रकाशन को विलम्ब में डाला हुआ था इस कारण उसके लिए दूसरी विशेष शाख़ाओं से जो अल्लाह के आदेशानुसार स्थापित थीं, कुछ बचत न निकल सकी और किताब के छपने में विलम्ब होने का यही भेद था ताकि इस रुकावट की अवधि में कुछ गूढ़ज्ञान और वास्तविकताऐं लेखक पर पूर्ण रूप से खुल जायें और इसी प्रकार विरोधियों का सारा बुख़ार बाहर निकल आए। अब जो अल्लाह की विशेष इच्छा फिर इस ओर हुई कि शेष किताबों का काम पूरा हो तो उस ने इस निमन्त्रण पत्र के लिखने की ओर मुझे ध्यान दिलाया। अत: इस समय मुझे किताबों की छपाई पूरी करना अत्यन्त ज़रूरी है। बराहीन का बहुत सा भाग अभी भी प्रकाशन के योग्य है यदि वह तैयार हो जाये तो ख़रीदारों को और उन सबको पहुँचाया जाए जिन को अल्लाह के लिए पहले भाग दिये गये हैं और आगे देने का वादा है। ऐसा ही दूसरी पुस्तकें जैसे **'अशैअ्अतुल क़ुरआन'**, **'सिराजे मुनीर'**, **'तजदीदे दीन'**, **'अरबईन फ़ी अलामातिल मुक़र्रबीन'** और क़ुरआन शरीफ की एक व्याख्या लिखने की भी इच्छा है और यह भी दिल में जोश है कि ईसाई इत्यादि मिथ्या धर्मों के खण्डन में और उनके समाचार पत्रों के मुक़ाबले पर मासिक रूप से एक पत्रिका निकला करे तथा उन सब कामों के नियमित जारी रखने के लिए धन का प्रबन्ध और आर्थिक सहायता के अतिरिक्त और कोई रोक बीच में नहीं। यदि हम को यह उपलब्ध हो जाए कि एक छापाख़ाना हमारा हो और एक कापी लिखने वाला

सदा के लिए हमारे पास रहे और समस्त आवश्यक खर्चों के साधन हमें प्राप्त हों अर्थात जो कुछ काग़ज़, छपाई और कापी लिखने वालों के वेतन में खर्च होता है वे सारे ख़र्चे समय-समय पर बराबर पहुँचते रहें तो इन पाँच शाख़ाओं में से इस एक शाख़ा की पूरे तौर पर प्रगति की पर्याप्त व्यवस्था हो जायेगी।

हे भारतवर्ष, क्या तुझ में कोई ऐसा साहसी धनी व्यक्ति नहीं कि यदि और नहीं तो केवल इसी शाख़ा के खर्चे को उठा सके। यदि पाँच सामर्थ्यवान मौमिन इस अवसर को पहचान लें तो इन पाँच शाख़ाओं की व्यवस्था को अपने अपने ज़िम्मे ले सकते हैं। हे ख़ुदावन्द ख़ुदा, तू स्वयं इन दिलों को जगा। इस्लाम पर अभी ऐसी दरिद्रता का समय नहीं आया, दिल कठोर हैं ऐसा अभाव नहीं और वे लोग जो पूर्ण सामर्थ्य नहीं रखते वे भी इस रंग में इस कारख़ाना की सहायता कर सकते हैं जो अपनी-अपनी आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार मासिक सहयोग के रूप में दृढ़ वचन के साथ कुछ-कुछ रक़म इस कारखाना के नाम भेंट किया करें। सुस्ती और शिथिलता तथा दुर्भावना से कभी धर्म को लाभ नहीं पहुँचता। दुर्भावना घरों को वीरान करने वाली और दिलों में फूट डालने वाली है। देखो जिन्होंने नबियों का साथ पाया उन्होंने धर्म के प्रचार के लिए कैसे-कैसे प्रयास किए। जैसे एक धनवान ने धर्म के मार्ग में अपना सारा धन प्रस्तुत किया। ऐसा ही एक फ़कीर भिखारी ने अपने प्रिय टुकड़ों की भरी हुई थैली प्रस्तुत कर दी और ऐसा ही किया जब तक कि ख़ुदा तआला की ओर से विजय का समय आ गया। मुसलमान बनना सहज नहीं, मौमिन की उपाधि पाना सरल नहीं। अतः हे लोगो यदि तुम में वह सत्य की प्रेरणा है जो मौमिनों को दी जाती है तो मेरी इस पुकार को सरसरी दृष्टि से न देखो। पुण्य प्राप्त करने का प्रयत्न करो कि ख़ुदा तआला तुम्हें आसमान पर देख रहा है कि तुम इस सन्देश को सुनकर क्या उत्तर देते हो।

हे मुसलमानो! जो पराक्रमी मौमिनों की धरोहर और सदात्मा लोगों की संतान हो। इन्कार और दुर्भावना की ओर जल्दी न करो और उस भयानक

महामारी से डरो जो तुम्हारे आस-पास फैल रही है और असंख्य लोग उसके जाल में फंस गये हैं। तुम देखते हो कि कितने ज़ोर से इस्लाम धर्म को मिटाने के लिए प्रयास हो रहा है। क्या तुम पर यह कर्तव्य नहीं कि तुम भी प्रयत्न करो। इस्लाम मनुष्य की ओर से नहीं कि मनुष्य के प्रयासों से नष्ट हो सके। परन्तु खेद उन पर है कि जो इसको मिटाने के लिए तत्पर हैं और फिर दूसरा खेद उन पर है जो अपनी औरतों और अपने बच्चों और अपने प्राणों की ख़ुशी और आनन्द के लिए तो उनके पास सब कुछ है परन्तु इस्लाम के लिए उनकी जेब में कुछ भी नहीं। सुस्त लोगो तुम पर खेद। तुम तो स्वयं इस्लाम की प्रतिष्ठा और धर्म के प्रकाश को प्रकट करने की कुछ भी शक्ति नहीं रखते परन्तु ख़ुदा तआला के स्थापित कारख़ाना को भी जो इस्लाम की चमकार प्रकट करने के लिए आया है धन्यवाद के साथ स्वीकार नहीं कर सकते। आज कल इस्लाम उस दीपक की भाँति है जो एक सन्दूक में बन्द कर दिया जाये अथवा उस मीठे पानी के झरने की भाँति है जो कूड़ा करकट से छुपा दिया जाये। इसी कारण इस्लाम अवनति की अवस्था में पड़ा है, इसका सुन्दर चेहरा दिखाई नहीं देता, इसकी मन-मोहक आकृति दृष्टिगोचर नहीं होती। मुसलमानों का कर्तव्य था कि इसकी प्यारी सूरत दिखलाने के लिए जान तोड़कर प्रयत्न करते और धन क्या ख़ून को भी पानी की भाँति बहाते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे अपनी घोर मूर्खता से इस भूल में फंसे हुए हैं कि क्या पहली किताबें पर्याप्त नहीं। नहीं जानते कि नयी बुराइयों को दूर करने के लिए जो नयी-नयी प्रक्रिया से प्रकट होती जाती हैं रोकथाम भी नवीन प्रकार की ही होनी चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक युग के अन्धेरे के फैलने के समय नबी, रसूल और सुधारक आते रहे, क्या उस समय पहली किताबें नहीं थीं? अत: भाइयो यह तो ज़रूरी है कि अन्धेरे के फैलने के समय प्रकाश आकाश से उतरे। मैं इसी लेख में वर्णन कर चुका हूँ कि ख़ुदा तआला सूर: अल् क़दर में वर्णन करता है अपितु मौमिनों को ख़ुशख़बरी देता है कि उसकी वाणी और

उसका नबी लैलतुलक़द्र में आकाश से उतारा गया है और प्रत्येक सुधारक और रिफार्मर जो ख़ुदा तआला की ओर से आता है वह लैलतुलक़द्र में ही उतरता है। तुम समझते हो कि लैलतुल क़द्र क्या चीज़ है। लैलतुलक़द्र उस अंधकारमय युग का नाम है जिसका अंधेरा अपने अन्तिम चरण को पहुँच जाता है। इसलिए वह युग स्वाभाविक रूप से चाहता है कि एक प्रकाश उतरे जो उस अंधकार को दूर करे। उस युग का नाम रूपक स्वरूप लैलतुलक़द्र रखा गया है। परन्तु वस्तुतः यह रात नहीं है यह एक युग है जो अंधकार के कारण रात के अनुरूप है। नबी की मृत्यु अथवा उसके आध्यात्मिक अत्तराधिकारी की मृत्यु के पश्चात हज़ार महीना जो मानवीय उम्र के दौर को प्राय पूरा करने वाला और मनुष्य की विचार शक्ति की विदाई की सूचना देने वाला है गुज़र जाता है तो यह रात अपना रंग जमाने लगती है। तब आसमानी कार्यवाही से एक अथवा कई सुधारकों का परोक्ष रूप से बीजारोपण हो जाता है जो नयी शताब्दी के प्रारम्भ में प्रकट होने के लिए अन्दर ही अन्दर तैयार हो रहे हैं। इसी ओर अल्लाह तआला संकेत देता है कि [1] لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ (लैलतुलक़द्र ख़ैरुम्मिन अल्फ़े शहर) अर्थात उस लैलतुलक़द्र के प्रकाश को देखने वाला और अपने समय के सुधारक से लाभान्वित होने वाला उस अस्सी वर्ष के बूढ़े से अच्छा है जिस ने उस प्रकाशमय समय को नहीं पाया। यदि एक घड़ी भी उस समय को पा लिया है तो यह एक घड़ी उस हज़ार महीने से उत्तम है जो पहले गुज़र चुके। क्यों उत्तम है ? इसलिए कि उस लैलतुल क़द्र में ख़ुदा तआला के फरिश्ते और रूहुलक़ुदुस उस सुधारक के साथ प्रतापवान अल्लाह के आदेश से आसमान से उतरते हैं न कि व्यर्थ रूप से, अपितु इसलिए ताकि तत्पर दिलों पर उतरें और शान्ति और सुरक्षा के मार्ग खोलें। अतः वे समस्त मार्गों के खोलने और समस्त पर्दों के उठाने में व्यस्त रहते हैं यहाँ तक कि आलस्य का अंधेरा दूर होकर हिदायत की सुबह उदय हो जाती है।

अब हे मुसलमानो ! ध्यानपूर्वक इन आयतों को पढ़ो कि ख़ुदा तआला

---

①-अलक़द्र : 4

इस ज़माने की कितनी अच्छाई वर्णन करता है जिस में आवश्यकता के समय पर कोई सुधारक संसार में भेजता है क्या तुम ऐसे युग को महत्व नहीं दोगे, क्या तुम ख़ुदा तआला के आदेशों को उपहास की दृष्टि से देखोगे ?

अतः हे इस्लाम के सामर्थ्यवान लोगो देखो ! मैं यह सन्देश आप लोगों को पहुँचा देता हूँ कि आप लोगों को इस सुधार करने वाले कारखाना की जो ख़ुदा तआला की ओर से निकला है अपने समस्त दिल, समस्त ध्यान और पूर्ण निष्ठा से सहायता करनी चाहिए और इसके सारे पहलुओं को श्रद्धा की दृष्टि से देखकर शीघ्र सेवा का दायित्व उठाना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुकूल कुछ मासिक रूप से देना चाहता है वह इसको अनिवार्य दायित्व और धर्म समझ कर स्वयं अपनी सोच से मासिक रूप से अदा करे और इस कर्तव्य को केवल अल्लाह के लिए भेंट स्वरूप निर्धारित करके उसके अदा करने में विलम्ब अथवा सुस्ती न करे और जो व्यक्ति एक साथ सहयोग के रूप में देना चाहता है वह उसी प्रकार अदा करे, परन्तु स्मरण रहे कि वास्तविक उद्देश्य जिस पर इस सिलसिला के निरन्तर चलने की आशा है वह यही व्यवस्था है कि धर्म के सच्चे शुभचिन्तक अपनी आर्थिक स्थिति और अनुकूलता के अनुरूप ऐसी सरल रक़में जो आसानी से अदा कर सकें मासिक रूप से अदा करना अपने ऊपर एक अनिवार्य वायदे के रंग में ठहरा लें सिवाए इसके कि कोई आकस्मिक रोक पैदा हो। हाँ जिसको अल्लाह तआला सामर्थ्य और खुला दिल प्रदान करे वह इस मासिक चन्दे के अतिरिक्त अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार एक बार में भी मदद कर सकता है। और तुम, हे मेरे प्यारो ! मेरे अस्तित्व की हरी-भरी शाखाओ ! जो ख़ुदा तआला की उस कृपा से जो तुम पर है मेरे सिलसिला बैअत में दाख़िल हो और अपना जीवन, अपना आराम,अपना धन इस मार्ग में सौंप रहे हो। यद्यपि मैं जानता हूँ कि मैं जो कुछ कहूँ तुम उसे स्वीकार करना अपना सौभाग्य समझोगे और जहाँ तक तुम्हारी सामर्थ्य है पीछे नहीं हटोगे। परन्तु मैं इस सेवा के लिए निश्चित रूप से

अपनी ज़ुबान से तुम पर कुछ अनिवार्य नहीं कर सकता। ताकि तुम्हारी सेवाऐं मेरे कहने की बाध्यता से नहीं अपितु अपनी इच्छा से हों। मेरा मित्र कौन है ? और मेरा प्रिय कौन है ? वही जो मुझे पहचानता है। मुझे कौन पहचानता है ? केवल वही जो मुझ पर विश्वास रखता है कि मैं भेजा गया हूँ और मुझे उस प्रकार स्वीकार करता है जिस प्रकार वे लोग स्वीकार किए जाते हैं जो भेजे गए हों। दुनिया मुझे स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि मैं दुनिया में से नहीं हूँ। परन्तु जिनकी प्रकृति को उस लोक का अंश दिया गया है वे मुझे स्वीकार करते हैं और करेंगे। जो मुझे छोड़ता है वह उसको छोड़ता है जिस ने मुझे भेजा है और जो मुझ से जुड़ता है वह उस से जुड़ता है जिसकी ओर से मैं आया हूँ। मेरे हाथ में एक दीपक है, जो व्यक्ति मेरे पास आता है वह अवश्य उस प्रकाश से लाभान्वित होगा परन्तु जो व्यक्ति भ्रम और दुर्भावनावश दूर भागता है वह अन्धेरे में डाल दिया जायेगा। इस युग का अभेद्यदुर्ग मैं हूँ। जो मुझ में प्रविष्ट होता है वह चोरों और लुटेरों और दरिंदों से अपनी जान बचाएगा, परन्तु जो व्यक्ति मेरी दीवारों से दूर रहना चाहता है प्रत्येक दिशा से उसको मृत्यु का सामना है और उसकी लाश भी सुरक्षित नहीं रहेगी। मुझ में कौन प्रविष्ट होता है ? वही जो बुराईयों को छोड़ता है और अच्छाई को अपनाता है और झूठ को त्यागता है और सच्चाई पर क़दम मारता है और शैतान की ग़ुलामी से आज़ाद होता है और ख़ुदा तआला का एक आज्ञाकारी भक्त बन जाता है। प्रत्येक जो ऐसा करता है वह मुझ में है और मैं उस में हूँ। परन्तु ऐसा करने पर केवल वही सक्षम होता है जिसको ख़ुदा तआला पवित्र आत्मा की छाया में डाल देता है। तब वह उसके मन के नर्क के अन्दर अपना पैर रख देता है तो वह ऐसा ठंडा हो जाता है कि मानो उस में कभी आग नहीं थी। तब वह उन्नति पर उन्नति करता है यहाँ तक कि ख़ुदा तआला की आत्मा उसमें बसती है और एक विशेष चमक के साथ विश्व के प्रतिपालक का ठहराव उसके दिल पर होता है तब पुराना व्यक्तित्व जलकर एक नया

और पवित्र व्यक्तित्व उसको प्रदान किया जाता है और ख़ुदा तआला भी एक नया ख़ुदा होकर नये और विशेष रूप में उस से सम्बंध स्थापित करता है और स्वर्गीय जीवन का समस्त पवित्र सामान इसी जगत में उसको मिल जाता है।

इस स्थान पर मैं इस बात को प्रकट करने और धन्यवाद अदा किए बिना रह नहीं सकता कि ख़ुदा तआला की दया और कृपा ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा। मेरे साथ भ्रातृत्व का सम्बंध जोड़ने वाले और इस सिलसिला (सम्प्रदाय)में जिसको ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है प्रविष्ट होने वाले प्रेम और निष्ठा के रंग से एक विचित्र रूप में रंगीन हैं। न मैं ने अपने परिश्रम से अपितु ख़ुदा तआला ने अपने विशेष उपकार से यह सदात्मा लोग मुझे प्रदान किए हैं। सर्व प्रथम मैं अपने एक आध्यात्मिक भाई की चर्चा करने के लिए दिल में जोश पाता हूँ जिन का नाम उनकी श्रद्धा के प्रकाश की भाँति नूरुद्दीन है। मैं उनकी कुछ धार्मिक सेवाओं को जो अपने वैध धन के खर्च से इस्लाम के नाम को ऊँचा करने के लिए वह कर रहे हैं सदा विस्मय की दृष्टि से देखता हूँ कि काश ! वे सेवाऐं मुझ से भी अदा हो सकतीं। उनके दिल में जो धर्म की सहायता के लिए जोश भरा है उसकी कल्पना से अल्लाह की शक्ति और अपार शक्ति का नकशा मेरी आँखों के समाने आ जाता है कि वह कैसे अपने भक्तों को अपनी ओर खींच लेता है। वह अपने सम्पूर्ण धन और समस्त शक्ति और समस्त अधीनस्थ साधनों के साथ जो उनको प्राप्त हैं हर समय अल्लाह रसूल की आज्ञाकारिता के लिए तत्पर खड़े हैं। मैं न केवल नेक धारणा से अपितु अनुभव के आधार पर यह वास्तविक जानकारी रखता हूँ कि उन्हें मेरे मार्ग में धन क्या अपितु जान और सम्मान तक से इन्कार नहीं। यदि मैं अनुमति देता तो वह सब कुछ इस मार्ग में सौंप कर अपनी आध्यात्मिक निकटता की भाँति शारीरिक निकटता और हर समय सँगत में रहने का दायित्व पूरा करते। उनके कुछ पत्रों की कुछ पंक्तियाँ नमूना के रूप में पाठकवर्ग को दिखाता हूँ ताकि उन्हें ज्ञात हो कि मेरे प्यारे

भाई **मौलवी हकीम नूरुद्दीन भैरवी** उपचारक जम्मू राज्य ने प्रेम और निष्ठा की श्रेणी में कहाँ तक उन्नति की है। और वे पंक्तियाँ ये हैं–

''हमारे स्वामी, हमारे पथ-प्रदर्शक, हमारे इमाम अस्सलामो अलैकुम व रहमुतल्लाहे व बरकातोहू। महामहिम, मेरी दुआ यह है कि हर समय हुज़ूर की सेवा में उपस्थित रहूँ और युग के इमाम से जिस उद्देश्य के लिए वह नियुक्त किया गया है वह उद्देश्य प्राप्त करूँ। यदि अनुमति हो तो मैं नौकरी से निवृत्त हो कर दिन रात आपकी सेवा में पड़ा रहूँ अथवा यदि आदेश हो तो इस बंधन को छोड़ कर संसार में फिरूँ और लोगों को सच्चे धर्म की ओर बुलाऊँ और इसी मार्ग में जान दूँ। मैं आपके मार्ग में क़ुर्बान हूँ। मेरा जो कुछ है मेरा नहीं आपका है। हज़रत गुरू व पथ-प्रदर्शक, मैं पूर्ण सत्य के साथ निवेदन करता हूँ कि मेरा सारा धन और सम्पत्ति यदि धर्म के प्रचार-प्रसार में खर्च हो जाये तो मैं मनोकामना को पहुँच गया। यदि बराहीन अहमदिया के खरीदारों के कारण किताब की छपवाई में विलम्ब होने पर चिन्तित हैं तो मुझे अनुमति दें कि यह छोटी सी सेवा करूँ कि उनका अदा किया हुआ सब मूल्य अपने पास से वापस कर दूँ। हज़रत मान्यवर व पथ-प्रदर्शन, यह विनीत और अधम निवेदन करता है यदि स्वीकार हो तो मेरा सौभाग्य है। मेरी इच्छा है कि बराहीन की छपवाई का समस्त खर्च मुझ पर डाल दिया जाये। फिर जो कुछ कीमत के रूप में वसूल हो वह रुपया आपकी ज़रूरत में खर्च हो। मुझे आपसे निसबते फ़ारूक़ी (हज़रत उमर फ़ारूक़[रज़ि.] को जिस प्रकार आँहज़रत स.अ.व. से आत्मीयता थी–अनुवादक) **है। और सब कुछ इस मार्ग में**

सौंपने के लिए तैयार हूँ। दुआ करें कि मेरी मृत्यु सदात्माओं की मृत्यु हो।''

माननीय मौलवी साहिब की सच्चाई और साहस तथा उनकी सहानुभूति तथा निस्वार्थता जैसे उनके वचन से प्रकट है उस से बढ़कर उनके व्यवहार से उनकी निष्ठापूर्ण सेवाओं से स्पष्ट प्रकट हो रहा है और वह प्रेम और श्रद्धा की अपार प्रेरणा से चाहते हैं कि सब कुछ यहाँ तक कि अपने परिवार की जीवनयापन की आवश्यक चीज़ें भी इसी मार्ग में सौंप दें। उन की आत्मा प्रेम के जोश और मस्ती से उन्हें शक्ति से अधिक क़दम बढ़ाने की सीख़ दे रही है और हर घड़ी और हर समय वह सेवा में लगे हुए हैं।(5) परन्तु यह अति निर्दयता है कि ऐसे प्राण निछावर करने वाले पर वे सारे सामर्थ्य से बढ़ कर बोझ डाल दिये जायें जिनको उठाना एक समूह का काम है। नि:सन्देह मौलवी साहिब इस सेवा का भार उठाने के लिए समस्त सम्पत्ति सौंपना और अय्यूब नबी की भाँति यह कहना कि अकेला आया और अकेला जाऊँगा स्वीकार कर लेंगे परन्तु यह दायित्व पूरी क़ौम का सामूहिक तौर पर है और सब पर अनिवार्य है कि इस ख़तरनाक और कलहपूर्ण युग में कि जो ईमान जैसे एक

हाशिया न. (5) हज़रत मौलवी साहिब इस्लामिक धर्म शास्त्र और हदीस और क़ुरआन की व्याख्या के क्षेत्र में उच्च स्तर की जानकारी रखते हैं। दर्शनशास्त्र और प्राचीन तथा आधुनिक विज्ञान के अच्छे जानकार हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में एक अत्यन्त अनुभवी चिकित्सक हैं। प्रत्येक कला कौशल की किताबें मिस्र, अरब, सिरिया और यूरोप के देशों से मंगवा कर एक बहुमूल्य पुस्तकालय तैयार किया है और जिस प्रकार दूसरे ज्ञान के महादर्शी हैं धर्मशास्त्र के तर्क वितर्क के क्षेत्र में भी बहुत अधिक अनुभवी हैं। बहुत ही उच्चकोटि की किताबों के लेखक हैं। इन दिनों **'तसदीक बराहीन अहमदिया'** नामक पुस्तक भी माननीय हज़रत ने ही लिखी है जो प्रत्येक खोजी स्वभाव के आदमी की दृष्टि में रत्नों से भी अधिक बहुमूल्य है। (इसी से)

संवेदनशील नाता को जो ख़ुदा और उसके भक्त के बीच में होना चाहिए बड़े ज़ोर व शोर के साथ झटके देकर हिला रहा है कि अपने अपने अच्छे परिणाम की चिन्ता करें और वे पुण्यकर्म जिन पर मुक्ति का आधार है अपने प्रिय धन के न्योछावर करने और बहुमूल्य समय को सेवा में खर्च करने से प्राप्त करें। और ख़ुदा तआला के उस अपरिवर्तनीय और अटल विधान से डरें जो वह अपनी परम वाणी में वर्णन करता है لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰى تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ[1] (लन तनालुल बिर्रा हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून) (आले ईमरान रूकू-8) अर्थात तुम वास्तविक पुण्य को जो मुक्ति तक पहुँचाता है कदापि पा नहीं सकते सिवाए इसके कि तुम ख़ुदा तआला के मार्ग में वह धन और वे चीज़ें खर्च करो जो तुम्हें प्रिय हैं।

इस स्थान पर मैं अपने कुछ अंतरंग मित्रों की भी चर्चा करना उचित समझता हूँ जो इस सिलसिला में दाख़िल हैं और मेरे साथ अधिक से अधिक आन्तरिक प्रेम का सम्बन्ध रखते हैं। उन में से प्रिय भाई **शेख महम्मद हुसैन** मुरादाबादी हैं जो इस समय मुरादाबाद से क़ादियान में आकर इस लेख की कापी अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए लिख रहे हैं। शेख़ साहिब का साफ सीना मुझे ऐसा दिखाई देता है जैसा आईना। वह मुझ से केवल अल्लाह के लिए अत्यधिक निष्ठा और प्रेम रखते हैं। उनका दिल अल्लाह के प्रेम से ओत-प्रोत है और अदभूत प्रकृति के आदमी हैं। मैं उन्हें मुरादाबाद के लिए एक प्रकाशमय दीपक समझता हूँ और आशा करता हूँ कि वह प्रेम और निष्ठा का प्रकाश जो उन में है किसी दिन दूसरों में भी प्रविष्ट होगा। शेख साहिब यद्यपि कम धनी हैं परन्तु दानवीर और खुले दिल के स्वामी हैं। हर प्रकार से इस विनीत की सेवा में व्यस्त रहते हैं और प्रेम से भरी हुई आस्था उनके अंग-अंग में रची हुई है।

उन में से एक प्रिय भाई **हकीम फ़ज़लदीन** हैं। माननीय हकीम साहिब जितना मुझ से प्रेम और निष्ठा और श्रद्धा और आन्तरिक सम्बंध रखते हैं

---

①-आलेइमरान : 93

मैं उस के वर्णन में असमर्थ हूँ। वह मेरे सच्चे शुभचिन्तक और आन्तरिक सहानुभूति रखने वाले और सत्यपरख पुरुष हैं। इसके पश्चात जो ख़ुदा तआला ने इस विज्ञापन के लिखने के लिए मुझे ध्यान दिलाया है और अपनी विशेष ईशवाणी से आशा दिलाई, मैंने कई लोगों से इस विज्ञापन के लिखने की चर्चा की कोई मुझ से सहमत नहीं हुआ परन्तु मेरे यह प्रिय भाई उसके बिना ही कि मैं उनसे चर्चा करता, स्वयं मुझे इस विज्ञापन के लिखने के लिए प्रेरक हुए और उसके खर्चों के लिए अपनी ओर से सौ रुपया दिया। मैं उनके ईमान की दूरदर्शिता से अचम्भित हूँ कि उनकी चाहत को ख़ुदा तआला की चाहत से समानता हो गई। वह सदा छुप-छुप कर सेवा करते रहते हैं और कई सौ रुपया गुप्त रूप से केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए इस मार्ग में दे चुके हैं। ख़ुदा तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

उन्हीं में से मेरे अत्यन्त प्रिय भाई अपनी जुदाई से हमारे हृदय को शोकग्रस्त करनेवाले स्वर्गीय **मिर्ज़ा अज़ीम बेग** साहिब (अल्लाह उन्हें क्षमा प्रदान करे) सामाना पटियाला क्षेत्र के मुखिया हैं। जो दूसरी रबीयुस्सानी 1308 हि. में इस संसार से चल बसे। اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ (निश्चय ही हम सब अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौट कर जानेवाले हैं।) اَلْعَیْنُ تَدْمَعُ وَ الْقَلْبُ یَحْزُنُ وَ اِنَّا بِفِرَاقِہٖ لَمَحْزُوْنُوْنَ आँख आंसू बहाती है दिल शोकाकुल है और हम उसकी जुदाई से बहुत दुखी हैं। स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब जितना मुझ से केवल अल्लाह की ख़ातिर प्रेम रखते और जितना मुझ पर न्यौछावर हो रहे थे मैं कहाँ से ऐसे शब्द लाऊँ ताकि इस प्रेम के दर्जे का वर्णन कर सकूँ और उनकी असामयिक जुदाई से मुझे जितना शोक और दुख पहुँचा है मैं अपने अतीत के दिनों में इसका उदाहरण बहुत कम ही देखता हूँ। वह हमारे बहुत कुछ और सर्वप्रिय हैं जो हमारे देखते देखते हम से विदा हो गये। जब तक हम जीवित रहेंगे उनकी जुदाई का शोक हमें कभी नहीं भूलेगा।

دردیست دردلم کہ گراز پیش آب چشم   بردارم آستین برود تا بدامنم①

उनकी जुदाई की याद से मन में उदासी और सीना में शोक की अधिकता से कुछ जलन और दिल में वेदना और आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं। उनका समस्त अस्तित्व प्रेम से भर गया था। स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब प्रेम पूर्ण जोशों के प्रकट करने के लिए बड़े बहादुर थे। उन्होंने अपना सारा जीवन उसी मार्ग में दान कर रखा था। मुझे आशा नहीं कि उन्हें कोई और सपना भी आता हो। यद्यपि मिर्ज़ा साहिब बहुत कम धनी आदमी थे परन्तु उनकी दृष्टि में धार्मिक सेवा-क्षेत्र में जो सदा करते रहते थे मिट्टी से बढ़कर धन नगण्य था, ज्ञान के मर्म को समझने के लिए अत्यन्त तीव्र बुद्धि रखते थे। प्रेम से भरा हुआ विश्वास जो इस विनीत के सम्बन्ध में वह रखते थे ख़ुदा तआला के पूर्ण प्रभाव का एक चमत्कार था। उनको देखने से मन ऐसा प्रसन्न हो जाता था जैसे एक फूलों और फलों से भरे हुए बगीचे को देखकर मन प्रसन्न होता है। वह प्रत्यक्षत: अपने पीछे रहने वालों और अपने छोटी आयु के बच्चे को अत्यन्त कमज़ोरी और अभाव और बे-सामानी की अवस्था में छोड़ गये। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा तू उनका पालक और संचालक बन और मुझ से प्रेम रखने वालों के दिलों में ईशवाणी डाल कि अपने इस निष्ठावान भाई के पीछे रहने वालों के लिए जो बेसहारा और बे-सामान रह गये कुछ सहानुभूति का कर्तव्य पालन करें।

اے خدااے چارہ سازِ ہر دل اندوہگیں	اے پناہ عاجزان آمرز گارِ مُذنبین②
از کرم آں بندۂ خودرا بہ بخشش ہانواز	ایں جُدا افتادگاں راازترحم ہا بہ بین③

मैंने नमूना के रूप में इस स्थान पर कुछ मित्रों का उल्लेख किया है और इसी रंग और इसी शान के मेरे और मित्र भी हैं जिनका विस्तार के साथ वर्णन अल्लाह ने चाहा तो एक स्थायी पत्रिका में करूँगा। अब लेख लम्बा होता जाता है इसी पर समाप्त करता हूँ।

①-आँसू आने से पूर्व ही मेरे हृदय मे एक प्रकार की पीड़ा है। मैं आस्तीन समेट लूँगा ताकि मेरे दामन तक पहुँच जाए। ②-हे परमेश्वर, प्रत्येक शोक ग्रस्त हृदय के उपचारक, हे असहायों की शरण, पापियों के क्षमा करने वाले। ③-अपनी कृपा से अपने भक्त पर दया कर और इससे जो पीछे रह गए हैं उन पर दया-दष्टि कर (अनुवादक)

मैं इस स्थान पर इस बात की चर्चा करना उचित समझता हूँ कि जितने लोग मेरे बैअत के सिलसिला में प्रविष्ट हैं वे सब के सब अभी इस बात के योग्य नहीं कि मैं उनके बारे में कोई उत्तम विचार प्रकट कर सकूँ, अपितु कुछ शुष्क शाखाओं की भाँति दिखाई देते हैं जिनको मेरा खुदावन्द जो मेरा सरंक्षक है मुझ से काट कर जलने वाली लकड़ियों में फेंक देगा। कुछ ऐसे भी हैं कि पहले तो उन में आन्तरिक तड़प और निष्ठा भी थी परन्तु अब उन पर कठोरता आई है और निष्ठा की सरगर्मी और एक अनुयायी में पाया जानेवाला प्रेम का प्रकाश शेष नहीं रहा अपितु केवल بَلْعَمْ बलअम की भाँति ढोंग शेष रह गया है और सड़े हुए दांत की भाँति अब सिवाए इसके किसी काम के नहीं कि मुँह से उखाड़ कर पैरों के नीचे डाल दिए जायें। वे थक गये और नरम पड़ गये और व्यर्थ के संसार ने उनको अपने धोखे के जाल में दबा लिया। अतः मैं सच-सच कहता हूँ कि वे शीघ्र ही मुझ से काट दिए जायेंगे सिवाए उस व्यक्ति के कि ख़ुदा तआला की कृपा पुनः उसका हाथ पकड़ ले। ऐसे भी बहुत हैं जिनको ख़ुदा तआला ने सदा के लिए मुझे दिया है और वे मेरे व्यक्तित्व रूपी वृक्ष की हरी-भरी शाखाऐं हैं और मैं इंशा अल्लाह किसी दूसरे समय में उनका वर्णन लिखूँगा। इस स्थान पर मैं कुछ लोगों का संदेह भी दूर करना चाहता हूँ कि जो धन सम्पन्न लोग हैं और अपने आपको बड़े दानशील और धर्म के मार्ग में निछावर समझते हैं परन्तु अपने धन को यथोचित स्थान पर खर्च करने से पूर्णतया वञ्चित हैं और कहते हैं कि यदि हम अल्लाह से समर्थित किसी सच्चे व्यक्ति का युग पाते जो धर्म के समर्थन के लिए ख़ुदा तआला की ओर से आया होता तो हम उसके सहयोग के लिए ऐसे झुकते कि निछावर ही हो जाते। परन्तु क्या करें प्रत्येक ओर धोखा और छल कपट का बाज़ार गरम है। परन्तु हे लोगो ! तुम पर स्पष्ट हो कि धर्म के समर्थन के लिए व्यक्ति भेजा गया परन्तु तुम ने उसे नहीं पहचाना। वह तुम्हारे बीच है और यही है जो बोल रहा है परन्तु तुम्हारी आखों पर भारी पर्दे हैं। यदि तुम्हारे

दिल सच्चाई को चाहने वाले हों तो जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के साथ वार्तालाप प्राप्ति का दावा करता है उसको जाँचना बहुत सरल है। उसके पास आओ, उसकी संगत में दो तीन सप्ताह रहो ताकि यदि ख़ुदा तआला चाहे तो उन बरकतों की बारिशें जो उस पर हो रही हैं और वे सच्ची ईशवाणी के प्रकाश जो उस पर उतर रहे हैं उन में से कुछ तुम स्वयं अपनी आँखों से देख लो। जो ढूंढता है वही पाता है। जो खट्खटाता है उसी के लिए खोला जाता है। यदि तुम आँखें बंद करके और अंधेरी कोठरी में छुप कर यह कहो कि सूर्य कहाँ है तो यह तुम्हारी शिकायत व्यर्थ है। हे नासमझ ! अपनी कोठरी के किवाड़ खोल और अपनी आँखों पर से पर्दा उठा ताकि तुझे सूर्य न केवल दिखाई दे अपितु अपने प्रकाश से तुझे प्रकाशमय करे।

कुछ लोग कहते हैं कि संस्थाएं स्थापित करना और पाठशालाएं खोलना इत्यादि ही धर्म के समर्थन के लिए पर्याप्त है परन्तु वे नहीं समझते कि धर्म किस चीज़ का नाम है और इस हमारे अस्तित्व का प्रमुख उद्देश्य क्या है और किस प्रकार और किन मार्गों से वह उद्देश्य प्राप्त हो सकता है। अत: उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि इस जीवन का प्रमुख उद्देश्य ख़ुदा तआला से वह सच्चा और पक्का सम्बन्ध प्राप्त करना है जो तामसिक बन्धनों से छुड़ा कर मुक्ति के स्रोत तक पहुँचाता है। अत: इस पूर्ण विश्वास के मार्ग मनुष्य के दिखावे और योजनाओं से कदापि खुल नहीं सकते और मनुष्य का बनाया हुआ दर्शन इस स्थान पर कुछ लाभ नहीं पहुँचाता, अपितु यह प्रकाश सदा से ख़ुदा तआला अपने विशेष भक्तों के द्वारा अन्धेरे के समय में आसमान से उतारता है और जो आसमान से उतरा वही आसमान की ओर ले जाता है। अत: हे वे लोगो! जो अन्धेरे के गढ़े में दबे हुए और शंका तथा सन्देह के पंजे में बन्द और काम भावनाओं के दास हो, केवल नाम और परम्परागत इस्लाम पर गर्व मत करो और अपनी सच्ची भलाई और अपनी वास्तविक उन्नति और अपनी अन्तिम सफलता उन्हीं उपायों में न समझो जो वर्तमान समय की अन्जुमनों

और मदरसों के द्वारा की जाती हैं। ये कार्य प्रारम्भिक रूप से लाभदायक तो हैं और उन्नति की पहली सीढ़ी मानी जा सकती हैं, परन्तु वास्तविक उद्देश्य से बहुत दूर हैं। सम्भवत: इन उपायों से दिमाग़ी चालाकियाँ उत्पन्न हों अथवा स्वभाव में कौशल और बुद्धि में तेज़ी और शुष्क तर्कविद्या की कला प्राप्त हो जाये अथवा विद्वान और प्रभाकर की उपाधि प्राप्त कर ली जाये और सम्भवत: लम्बे समय के ज्ञानोपार्जन के पश्चात वास्तविक उद्देश्य के कुछ सहयोगी भी हों परन्तु ता तिरयाक़ अज़ इराक़ आवुरदा शुद मार गज़ीदा मुर्दा शुद (अर्थात जब तक इराक़ से औषधि आएगी तब तक सांप का डसा हुआ मर जायेगा–अनुवादक)। अत: जागो, और सावधान हो जाओ। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ, ऐसा न हो कि परलोक की यात्रा इस अवस्था में आ जाए जो वस्तुत: नास्तिकता और बेईमानी की स्थिति हो। निश्चित समझो कि परिणाम सफल होने की आशा का पूर्ण आधार और निर्भरता इन पारम्परिक शिक्षाओं का अर्जन कदाचित नहीं हो सकता और उस आसमानी प्रकाश के उतरने की आवश्यकता है जो शंका और संदेह के प्रदूषण को दूर करता और कामवासना की अग्नि को बुझाता और ख़ुदा तआला के सच्चे प्रेम और सच्ची लगन और सच्ची आज्ञाकारिता की ओर खींचता है। यदि तुम अपने विवेक से प्रश्न करो तो यही उत्तर पाओगे कि वह सच्चा आनन्द और सच्ची सन्तुष्टि कि जो एक पल में आध्यात्मिक परिवर्तन का कारण बनती है वह अभी तक तुम को प्राप्त नहीं। अत: अत्यन्त खेद की बात है कि जितना तुम पारम्परिक बातों और पारम्परिक शिक्षा के प्रसार व प्रचार के लिए जोश रखते हो उसका दसवाँ भाग भी आसमानी व्यवस्था की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं। तुम्हारा जीवन अधिकतर ऐसे कामों के लिए समर्पित हो रहा है कि पहले तो वह काम किसी प्रकार से धर्म से सम्बन्ध ही नहीं रखते और यदि रखते भी हैं तो वह सम्बन्ध एक साधारण दर्जा का और वास्तविक उद्देश्य से बहुत पीछे है। यदि तुम में वे इंद्रियाँ हों और वह बुद्धि हो जो ज़रूरी मतलब पर जा ठहरती है तो

तुम कदापि आराम न करो जब तक वह वास्तविक उद्देश्य तुम्हें प्राप्त न हो जाये। हे लोगो तुम अपने सच्चे ख़ुदावन्द ख़ुदा, अपने वास्तविक स्रष्टा, अपने वास्तविक उपास्य की पहचान, प्रेम और आज्ञाकारिता के लिए पैदा किए गये हो। अत: जब तक यह बात जो तुम्हारी पैदाइश का परम उद्देश्य है स्पष्ट रूप में तुम पर प्रकट न हो तब तक तुम अपने वास्तविक मोक्ष से बहुत दूर हो। यदि तुम न्याय के साथ बात करो तो तुम अपनी आन्तरिक अवस्था पर स्वयं ही साक्षी हो सकते हो कि ख़ुदा की उपासना को छोड़ हर समय संसार की उपासना की एक बड़ी मूर्ति तुम्हारे दिल के सामने है जिसको तुम एक-एक सेकेण्ड में हज़ार-हज़ार सज्दे कर रहे हो। और तुम्हारा सारा समय संसार की बक-बक में ऐसा समर्पित है कि तुम्हें दूसरी ओर दृष्टि उठाने की फुर्सत नहीं। कभी तुम्हें याद भी है कि परिणाम इस हस्ती का क्या है? कहाँ है तुम में न्याय ! कहाँ है तुम में ईमानदारी ! कहाँ है तुम में वह सच्चाई और ख़ुदा का डर और दयानतदारी और विनम्रता जिसकी ओर तुम्हें क़ुरआन बुलाता है। तुम्हें कभी भूले बिसरे सालों में भी तो याद नहीं आता कि हमारा कोई ख़ुदा भी है। कभी तुम्हारे दिल में नहीं आता कि उसके क्या-क्या अधिकार तुम पर हैं। सत्य तो यह है कि तुम ने कोई चाहत कोई ध्यान कोई सम्बंध उस वास्तविक क़य्यूम (ख़ुदा तआला) से रखा हुआ ही नहीं और उसका नाम तक लेना तुम पर भारी है। अब चालाकी से तुम लड़ोगे कि ऐसा कदापि नहीं, परन्तु ख़ुदा तआला की प्रकृति का नियम तुम्हें लज्जित करता है जबकि वह तुम्हें सतर्क करता है कि ईमानदारों की निशानियाँ तुम में नहीं। यद्यपि तुम अपनी सांसारिक सोचों और चिन्ताओं में बड़े ज़ोर से अपनी दूरदर्शिता और प्रबल मत के दावेदार हो परन्तु तुम्हारी योग्यता तुम्हारी तीक्ष्ण बुद्धि और तुम्हारी दूरदर्शिता केवल संसार के किनारों तक समाप्त हो जाती है। और तुम अपनी इस बुद्धि के द्वारा उस दूसरे जगत का एक कण के बराबर कोना भी नहीं देख सकते जिसमें सदैव निवास के लिए तुम्हारी आत्माऐं पैदा की

गई हैं। तुम संसार के जीवन पर ऐसे निश्चिन्त बैठे हो जैसे कोई व्यक्ति एक सदा रहने वाली चीज़ पर संतुष्ट हो जाता है। परन्तु वह दूसरा जगत जिसका आनन्द सच्ची सन्तुष्टि के योग्य और स्थायी है वह सारे जीवन में एक बार भी तुम्हें याद नहीं आता। क्या दुर्भाग्य है कि एक बड़ी महत्वपूर्ण बात से तुम पूर्ण रूप से निश्चेत और आँखें बन्द किए बैठे हो और जो व्यर्थ की बातें हैं उनकी चाहत में दिन रात सरपट दौड़ रहे हो। तुम्हें अच्छी प्रकार ज्ञात है कि निःसन्देह वह समय तुम पर आने वाला है जो एकपल में तुम्हारा जीवन और तुम्हारी समस्त आशाओं की समाप्ति कर देगा। परन्तु यह कैसा दुर्भाग्य है कि इसकी जानकारी रखते हुए भी अपने सारे समय को संसार की चाहत में ही बर्बाद कर रहे हो और सांसारिक इच्छा भी केवल वैध साधनों तक सीमित नहीं अपितु सभी अवैध साधन झूठ और धोखे से लेकर अनुचित हत्या तक तुम ने वैध ठहरा रखे हैं। इन समस्त लज्जाजनक अपराधों के साथ जो तुम में फैले हुए हैं कहते हो कि आसमानी प्रकाश और आसमानी सिलसिला (व्यवस्था) की हमें आवश्यकता नहीं। अपितु इस से घोर शत्रुता रखते हो। तुमने ख़ुदा तआला के आसमानी सिलसिला को बहुत हल्का समझ रखा है यहां तक कि उसकी चर्चा करने में भी तुम्हारी ज़ुबानें घृणा से भरे हुए शब्दों के साथ और बड़े अहंकार और नाक चढ़ाने की हालत में निंदा का भार उठाती हैं। तुम बार-बार कहते हो कि हमें किस प्रकार विश्वास हो कि यह सिलसिला अल्लाह की ओर से है। मैं अभी इस का उत्तर दे चुका हूँ कि इस वृक्ष को इस के फलों से और इस सूर्य को इसके प्रकाश से पहचानोगे। मैंने एक बार यह सन्देश तुम्हे पहुँचा दिया है अब तुम्हारे अधिकार में है कि इसको स्वीकार करो अथवा न करो और मेरी बातों को याद रखो अथवा मस्तिष्क से भुला दो।

जीते जी क़द्र बशर की नहीं होती प्यारो
याद आयेंगे तुम्हें मेरे सुख़न मेरे बाद

خاتمہ مشتمل بر مرثیہ تفرقہ حالتِ اسلام
(अर्थात इस्लाम की मतभेदपूर्ण परिस्थिति पर आधारित शोककाव्य पर समाप्ति)

بر پریشاں حالئِ اسلام و قحطُ المسلمین   مے سزد گر خوں ببارد دیدۂ ہر اہل دیں

इस्लाम की दुर्दशा और मुसलमानों के अकाल पर उचित यह है कि प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति की आँख ख़ून के आँसू बहाए।

دینِ حق را گردش آمد صعبناک وسہمگیں   سخت شورے او فتاد اندر جہاں از کفرو کیں

ख़ुदा के धर्म पर अत्यन्त भयानक और विपत्तिपूर्ण संकट आ गया , कुफ़्र और दुर्भाग्य के कारण जगत में घोर उपद्रव फैल गया।

آنکہ نفس اوست از ہر خیر وخوبی بےنصیب   مے تراشد عیب ہا در ذات خیر المرسلین

वह व्यक्ति जिसका हृदय प्रत्येक भलाई और अच्छाई से वञ्चित है वह भी समस्त रसूलों में श्रेष्ठतम मुहम्मद[स.] की हस्ती में दोष निकालता है।

آنکہ در زندانِ ناپاکی ست محبوس وا سیر   ہست در شانِ امامِ پاکبازاں نکتہ چیں

वह जो स्वयं अपवित्रता के कारावास में बन्दी है वह भी पवित्र लोगों के सरदार की शान में आलोचना करता है।

تیر بر معصوم مے بارد خبیثے بدگُہر   آسماں رامے سزد گر سنگ باردبر زمیں

कुमूल और दुराचारी मनुष्य उस निर्दोष पर तीर चलाता है, आसमान को चाहिए कि धरती पर पत्थर बरसाए।

پیش چشمانِ شما اسلام در خاک اُوفتاد   چیست عذرے پیش حق اے مجمع المتنعمین

तुम्हारी आँखों के सामने इस्लाम मिट्टी में मिल गया। अत: हे धनवान मानी लोगों के समूह तुम्हारा ख़ुदा के सामने क्या बहाना है।

ہر طرف کفرست جوشاں ہمچو افواجِ یزید   دینِ حق بیمارو بیکس ہمچو زَینُ العابدین

यज़ीद की फौजों की भाँति प्रत्येक ओर कुफ़्र जोश में है और सच्चा धर्म ज़ैनुल आबिदीन की भाँति बीमार और असहाय है।

مردمِ ذی مقدرت مشغولِ عشرت ہائے خویش　　خُرّم و خنداں نشستہ باَبُتانِ نازنین

धनवान लोग भोग-विलास में व्यस्त हैं और सुन्दर महिलाओं के साथ आनन्द उठा रहे हैं।

عالماں را روزوشب باہم فساد　　زاہداں غافل سراسر از ضرورت ہائے دیں

विद्वान दिन-रात कामुक आवेगों के कारण परस्पर लड़ रहे हैं और तपस्वी धर्म के परम कर्तव्यों से पूर्णतया लापरवाह हैं।

ہر کسے از بہر نفسِ دُونِ خود طرفے گرفت　　طرفِ دیں خالی شدو ہر دشمنے جست از کمیں

प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी नीच मनोवृत्ति के लिए एक पहलू अपना लिया है इसलिए धर्म का पहलू रिक्त है। अत: प्रत्येक शत्रु घात लगाने के स्थान से कूद पड़ा ।

اے مسلماناں چہ آثارِ مسلمانی ہمیں ست　　دیں چنیں ابتر شما در جیفۂ دنیا رہیں

हे मुसलमानो! क्या यही मुसलमानी के लक्षण हैं, धर्म की तो यह अवस्था है और तुम निर्जीव संसार में लिप्त हो।

کاخِ دنیا را چہ استحکام در چشمِ شماست　　یا مگر از دل بروں کر دید موتِ اوّلیں

क्या तुम्हारी दृष्टि में संसार का महल बहुत मज़बूत है? सम्भवत: पहले लोगों की मृत्यु का विचार तुम्हारे दिल से निकल गया है।

دورِ موت آمد قریب اے غافلاں فکرش کنید　　دَورِ مے تاکے بخوبانِ لطیف و مہ جبیں

हे असावधान लोगो ! मृत्यु निकट आ गई है उसकी चिन्ता करो, सुन्दर और मनमोहिनी प्रेमिकाओं के साथ मदिरापान का दौर कब तक चलता रहेगा।

نفس خود رابستہ دنیا مدار اے ہوشمند　　ورنہ تلخی ہا بہ بینی وقتِ انفاسِ پسیں

हे बुद्धिमान ! अपने मन को संसार का बन्दी मत बना अन्यथा मृत्यु की घड़ी में बहुत कठोरता सहन करेगा।

دل مدہ اِلّا بدلدارے کہ حُسنش دایم ست　　تا سرورِ دائمی یابی زِ خیر المحسنین

उस प्रेमी को छोड़ कर जिसकी सुन्दरता अविनाशी है और किसी को दिल न दे ताकि तू शाश्वत आनन्द परम दयालु खुदा की ओर से प्राप्त करे।

آن خرد مندے کہ او دیوانۂ راہش بود   ہوشیارے آنکہ مستِ روئے آن یارِ حسیں

वह व्यक्ति बुद्धिमान है जो उसके मार्ग का दीवाना है और वह व्यक्ति होशियार है जो उस परम सुन्दर प्रियतम के मुखमंडल का आसक्त है।

ہست جامِ عشق اُو آبِ حیاتِ لازوال   ہر کہ نوشید ست اُو ہرگز نہ میرد بعدا زیں

उसके प्रेम का प्याला अविनाशी अमृत है, जिस ने उसे पी लिया वह फिर कदापि नहीं मरेगा।

اے برادر دل مَنہِ در دولتِ دنیاءِ دُوں   زہرخوں ریزست در ہر قطرۂ ایں انگبیں

हे भाई इस नीच संसार के धन सम्पदा से हृदय न लगा इस मधु की प्रत्येक बूंद में घातक विष भरा हुआ है।

تاتوانی جہد کُن از بہرِ دیں باجان و مال   تا زِ ربّ العرش یابی خلعتِ صد آفریں

जहाँ तक तुझ से हो सकता हो जान तथा दिल के साथ धर्म के लिए कोशिश कर ताकि अकाश के ख़ुदा की ओर से प्रसन्नता का उपहार प्राप्त करे।

ازعمل ثابت کن آں نورے کہ در ایمانِ تُست   دل چو دادی یوسفے را راہِ کنعاں را گزیں

उस प्रकाश को जो तेरे ईमान में है अपने कर्म से प्रमाणित कर। जब तू ने यूसुफ को दिल दिया तो किनआन (स्थान का नाम) का मार्ग भी धारण कर।

یاد ایاّمیکہ ایں دیں مرجع ہر کیش بود   عالمے را وارہانید از رہِ دیوِ لعیں

वे दिन याद हैं जब यह धर्म (इस्लाम) सब धर्मों के अनुयाइयों का केन्द्र बना हुआ था और श्रापित शैतान के मार्ग से उस ने एक जगत को छुड़ाया था।

بر زمیں گسترد ظلِّ تربیت از نورِ علم   پائے خود مے زد زعزّ و جاہ بر چرخِ بریں

ज्ञान के प्रकाश द्वारा उस ने संसार में उत्तम प्रशिक्षण की छाया फैला रखी थी तथा मान-मर्यादा के कारण उसका क़दम आसमान पर था।

این زمانے آنچناں آمد کہ ہر ابن الجہول   از سفاہت میکند تکذیب ایں دینِ متیں

अब ऐसा युग आ गया है कि प्रत्येक मूर्ख अज्ञानता के कारण इस सुदृढ़ धर्म को झुठलाता है।

صد ہزاراں ابلہاں از دیں بُروں بر دند رخت　　صد ہرزاراں جاہلاں گشتند صید الماکریں

लाखों मूर्ख धर्म से बाहर निकल गये और लाखों अज्ञान षड्यन्त्र करने वालों के शिकार बन गये

بر مسلماناں ہمہ ادبار زیں رہ اوفتاد　　کزپئے دیں ہمّت ِ شاں نیست باغیرت قریں

मुसलमानों पर समस्त तिरस्कार इसलिए पड़ा कि धर्म के सम्बन्ध में उनके साहस ने उनके स्वाभिमान का साथ नहीं दिया।

گربگردد عالمے از راہِ دین ِ مصطفےٰ　　از رہِ غیرت نمے جنبند ہم مثلِ جنیں

यदि एक जगत मुस्तफा के धर्म मार्ग से विमुख हो जाए तो भ्रूण के बराबर भी वे स्वाभिमान से हलचल नहीं करते।

فکر ایشاں غرق ہر دم در رہِ دنیائے دُوں　　مال ایشاں غارت اندر راہِ نسوان وبنیں

वे हर घड़ी इस नीच संसार की चिन्ता में मग्न रहते हैं और उनका धन स्त्रियों और पुत्रों पर खर्च होता रहता है।

ہرکجا در مجلسے فسق ست ایشاں صدرِ شاں　　ہر کجا ہست از معاصی حلقۂ ایشاں نگیں

जिस सभा में भी निर्लज्जता और अश्लीलता हो वे उसके सभापति होते हैं और जहाँ पापियों का जमावड़ा हो वे नगीना की भाँति होते हैं।

باخرابات آشنا بیگانہ از کوئے ہُدیٰ　　نفرت از ار بابِ دیں بامۓ پرستاں ہم نشیں

शराब के रसिया परन्तु हिदायत (सन्मार्ग) से अनजान, धर्मात्माओं से घृणा और मद्यपान करने वालों से संगत है।

رُو بگر دانید دلدارے کہ صد اخلاص داشت　　چوں ندید اندر دل ایں قوم صدق المخلصیں

जब उस प्रियतम ने इस जाति के हृदय में श्रद्धालुओं वाली वफ़ादारी न देखी तो उस प्रेमी ने अब इन से मुहँ फेर लिया जो पहले इन से प्रेम रखता था।

آں زمانِ دولت واقبالِ ایشاں در گزشت　　شومئ اعمالِ شاں آوُرد ایّامے چُنیں

इनके शासन और मान मर्यादा का युग तो बीत गया अब इन के कर्मों का कलंक ऐसे दिन ले आया।

از رہِ دِیں پروری آمد عروج اندرنخست   باز چوں آید بیاید ہم ازیں رہ بالیقیں

पहले जो उन्नति हुई थी वह धार्मिक विकास के मार्ग से हुई थी। पुनः जब होगी निस्सन्देह इसी मार्ग से होगी।

یاالٰہی باز کے آید زِ تو وقتِ مدد   باز کے بینیم آں فرخندہ ایّام وسنیں

हे ख़ुदा ! फिर कब तेरी ओर से मदद का समय आयेगा और हम फिर कब वह मंगलमय दिन और वर्ष देखेंगे।

ایں دوفکرِ دینِ احمد مغزِ جانِ ماگداخت   کثرتِ اَعدائے ملّت قلّتِ انصارِ دیں

धर्म के शत्रुओं की अधिकता और धर्म के सहयोगियों की कमी, अहमद के धर्म (इस्लाम) के बारे में इन दो चिन्ताओं ने मेरे प्राण को बिल्कुल घुला दिया।

اے خدا زود آوبرما آبِ نصرت ہا ببار   یامرا بردار یا ربّ زِیں مقامِ آتشیں

हे ख़ुदा ! शीघ्र आ और हम पर अपनी सहायता की वर्षा बरसा अन्यथा हे हमारे रब्ब इस आग्नेय जगत से मुझ को उठा ले।

اے خدا نورِ ہُدیٰ از مشرق رحمت برار   گُمرہاں را چشم کن روشن ز آیاتِ مبیں

हे ख़ुदा! दया के उदयस्थल से हिदायत का प्रकाश उदय कर और चमकते हुए निशान दिखलाकर पथभ्रष्टों की आँखें प्रकाशित कर।

چوں مرا بخشیدۂ صدق اندریں سوزوگداز   نیست اُمیدم کہ ناکامم بمیرانی دریں

जब तू ने मुझे इस जलन और तड़प के समय सत्य प्रदान किया है तो मुझे यह आशा नहीं कि तू इस कार्य में मुझे असफलता की मृत्यु देगा।

کاروبار صادقاں ہرگز نماند ناتمام   صادقاں را دستِ حق باشد نہاں درآستیں

सच्चों का कारोबार कदापि अधूरा नहीं रहता। सच्चों की आस्तीन में ख़ुदा का हाथ छुपा हुआ होता है।

आपत्तिकर्ताओं की जानकारी के लिए खुला विज्ञापन

हमारी इच्छा है कि वर्तमान समय में जितने सम्प्रदाय और भिन्न-भिन्न मत के लोग इस्लाम पर अथवा क़ुरआन की शिक्षा पर अथवा हमारे महानतम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आपत्ति करते हैं अथवा जो कुछ हमारी व्यक्तिगत बातों के बारे में आलोचना कर रहे हैं अथवा जो कुछ हमारे इल्हामों (ईश्वाणी) और हमारे इल्हामी दावों के बारे में उन के दिलों में सन्देह और आशंकाएं हैं उन सब आपत्तिओं को एक पत्रिका के रूप में क्रमानुसार लिखकर छाप दें और फिर उसी क्रम के अनुसार प्रत्येक आपत्ति और प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ करें। अतएव साधारणतया सभी ईसाईयों, हिन्दुओं, आर्यों, यहूदियों, पारसियों, नास्तिकों, ब्रह्मियों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और भिन्न-भिन्न मत रखने वाले मुसलमानों इत्यादि को सम्बोधित कर के विज्ञापन दिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस्लाम के बारे में अथवा क़ुरआन करीम, और हमारे महानतम रसूल के बारे में अथवा स्वयं हमारे बारे में, हमारे ख़ुदा प्रदत्त दर्जा के बारे में, हमारे इल्हामों (ईशवाणी) के बारे में कुछ आपत्ति रखता है तो यदि वह सत्य का अभिलाषी हो तो उस पर अनिवार्य है कि वह आपत्तिओं को स्पष्ट और साफ क़लम से लिख कर हमारे पास भेज दे ताकि वे समस्त आपत्तियाँ एक स्थान पर एकत्रित करके एक पत्रिका में क्रमानुसार लिखकर छाप दी जायें और फिर क्रमशः प्रत्येक का विस्तारपूर्वक उत्तर दिया जाये।

वस्सलाम

विनीत

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

ज़िला- गुरदासपुर (पंजाब)

10 जमादिउस्सानी 1308 हिजरी

घोषणा

इस पुस्तक के साथ दो और पुस्तकें लिखी गई हैं जो वस्तुतः इसी पुस्तक के अंश हैं। अतः इस पुस्तक का नाम ''फ़तह इस्लाम'' और दूसरी का नाम ''तौज़ीहे मराम'' और तीसरी का नाम ''इज़ाला औहाम'' है।

घोषणाकर्ता

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

FATEH ISLAM (in hindi)

by

The Promised Messiah
Hadhrat Mirza Ghulam Ahmad (as)
Founder of the Ahmadiyya Muslim Jama'at

9 781791 232294